॥ श्रीः ॥

मुन्शी "मुराद" का लिखा हुआ मशहूर नाटक

धूप-छाँह

जिसे

जी० पी० अरोड़ा ने गुजराती से नागरी अक्षरों में किया।

और

श्रीकृष्ण (हसरत) से शुद्ध कराके

जगन्नाथप्रसाद अरोड़ाने छपवाकर

प्रकाशित किया।

Printed by J. N. Rao.
at the Nageshwar Press. Benares

प्रथम बार

दाम

नाटक के पात्र

मर्द।

आतिशखान—आरकट का सौदागर, महारू का आशिक
हामिदखान—माहरू का आशिक।
बांकेखान—एक बागबान का लड़का, माहरू का सच्चा आशि
शेरखान—चंचल का नया शौहर, दिलेर खान का बाप
दिलेरखान—शेरखान का लड़का गुलचेहर का भाई।
मुफलिस—दौलत का शौहर।
हामिद—गुलचेहर का शौहर।
सफदर—सादक का लड़का।
चक्कर—सफदर का नौकर।
मुन्ना—मुफलिस का नौकर।
अशरफ—माहरू का बाप, एक गरीब जमींदार।
सादक—एक अमीर आदमी सफदर का बाप।
कासिम—दौलत का आशिक

इसके अलावः कासिद, अफसर, डाकू लड़के, कहार,
सिपाही, काजी, वगैरः वगैरः।

औरतें।

माहरू—अशरफ की लड़की, बांकेखान की बीबी।
गुलचहर—शेरखान की लड़की, हामिद की बीबी।
दिलरुबा—सफदर की बीबी।
चंचल—पहिले रमजू डाकू की बीबी, फेर शेरखान की मा
वालदा—माहरू की।
दौलत—चंचल की अगले घर की लड़की :
बुढ़िया—बांकेखान की वालदा।

इसके अलावा सहेलियां वगैरः॥

खुलासा—तमाशा।

अंकपहिला—सीन पहिल। बागमें माहरू वालदा-माहरू ौर सहेलियों का दिखाई देना नौकर का आना और आतिश-खानके नौकर के आने की खबर देना। वालदा माहरू का पासे बुलाना, आतिशखान का नौकर की शकल में आना, ालदा माहरू का उस्से यह कहना कि वह किसी नव्वाबके ाथ माहरू की शादी करेगी, किसी ऐरे गैरेसे नहीं। बहुत करारके साथ आतिशखान को जलील करके सब मिलकर िकालती हैं। आतिशखान कीना लेने का इरादा करता है। ासिद का आना और बांकेखान का नविश्ता देना। माहरू ा बांकेखान का खत पढ़ना और खफा होना। सहेलियों का ासिद की फजीहती करके निकाल देना। सीन दूसरा। ासर और चंद डाकुओं का जंगलमें दिखाई देना. हामिद आना और उन डाकुओं के हाथ फंसना। मुफलिस नामी डाकू हामिदके साथ बात चीत करके उसे छोड़ का इरादा करता है इतने में डाकूओं का सरदार दिलेर-ान आ जाता है। दिलेरखान और हामिद की बात चीत े बाद दिलेरखान हामिद को रिहा कर देता है। सफदर ौर चक्कर का आना चक्कर का डाकूओं का नाम सुन र घबराना, इतने में चंद डाकूओं का शेरखान को पकड़ र लाना, और मारडालने का इरादा करना। शेरखानकी ात चीत से सफदर को यह जाहिर होता है कि यही मेरा ससुरा है। नाम मालूम होनेसे डाकू शेरखान को मारने से ाथ रोकते हैं। चक्कर का शोर करना और डाकूओं का ेरखान को छोड़कर भाग जाना। एक तरफसे मुफलिस का ाना और शेरखान का खुश होकर अपना पाकेट वगैरह उसे

दे देना। सामने से सफदर का आना, इनको आता देख मुफलिस का भागजाना। शेरखान का सफदरसे अपना लाकेट (जोकि वह मुफलिस को दे चुका था) मांगना। सफदर का पाकेट से इन्कार करना इसी पर दोनों में बहोतसी बात चीत होती है बातों बातों में शेरखान को यह मालूम होता है कि यही (सफदर) मेरा होने वाला दामाद है। आखिर दोनों का घर की तरफ जाना। मुफलिस का एक तरफ से आकर अपनी होशियारी की तारीफ करना। सीन तीसरा। रास्ते में आतिशखान का बड़ बड़ाते हुये आना, हामिद का आना और दोनों की बात चीत, आखिर में दोनों का माहरू से बदला लेने पर आमादा होना। लड़कों के साथ बांकेखान बागवान का आना और माहरू के पास जो खत भेजा है उस का जबाब न आनेके सबब हैरान होना। आतिशखान और हामिदखान को यह जाहिर होताहै कि यह माहरू का आशिक है। दोनों का इसीके जरिये माहरूसे अपना बदला लेनेका इरादा करना, इतने में बांकेखानके कासिद का आना और जिस तरह वह माहरू के यहां पीटा गया था उसी तरह वह बांकेखान को पीट कर वहां का हाल बताता है। बांकेखान का अफसोस करने के बाद अपाना बदला लेने का इरादा करना उसी वक्त आतिशखान और हामिदखान का बांकेखान के पास आना, और बांकेखान को इस बातका यकीन दिलाकर राजीकर लेना कि हम तेरी शादी माहरू के साथ करा देंगे। सीन चौथा। दिलरुबा और गुलचहर की बात चीत, मुन्ना और मुफलिस का आना और बात चीत, चंचल और मुफलिस की बात चीत, मुफलिस का चंचल को यह बताना कि

आपके दामाद सफदरखान मय आपके खाबिन्द शेरखान के आ रहे हैं और यह समझाना कि सफदर खान खुद तो नौकर बनकर आता है और नौकरको सफदर बनाकर लाता है। चंचल की बेटी दौलत का आना और अपनी मांसे खुद अपने हुस्न की तारीफ करना इतने में शेरखान और सफदर का आना। शेरखान चंचल के साथ सफदर की मुलाकात कराता है। चंचल शेरखान को इस बात से आगाह करती है कि सफदर का नौकर तो असली सफदर है और सफदर उसका नौकर बनकर आया है। शेरखान भी इस बात को मान कर धोखा खा जाता है। शेरखान और सफदर की बात चीत, शेरखान सफदरसे कुर्सियां मागता है इतने में चक्कर आता है शेरखान उसे सफदर समझकर अदब कायदेसे बात करता है। याने मालिक को नौकर और नौकर को मालिक यह पुरमजाक सीन होता है। सीन पांचवां। आतिशखान और हामिद खान बांकेखान को नव्वाब बनाकर माहरूसे शादी करा देते हैं। सीन छठां। मुफलिस रमजू को यह बताता है कि तुम्हारी बीबी चंचल आजकल शेरखान के घरमें है। चंचल और शेरखान बातचीत करते हैं, रमजू छेड़ छाड़ करता है, दिलेरखान का आना, रमजू और मुफलिससे वहां आनेका सबब पूछना। रमजू का अपनी बीबी को मारने का मंशा जाहिर करना दिलेरखान का उसे समझाकर चुप कराना। सीन सांतवां। आतिशखान और हामिद खान माहरू को बनाते हैं, और बांकेखान गोलीसे आतिशखान को मार देता है।

ड्राप् सीन।

अंक दूसरा। सीन पहिला—मुर्दा गाड़ने वाले आतिशखान को गाड़ने के वास्ते गड्ढा खोदते हैं, हामिदखान उन्हें ईनाम देकर चला जाता है। आतिशखान फेर होश में आने लगता है उसे हिलता देखकर मुर्दा गाड़ने वाले भूत के खौफ से भाग जाते हैं। आतिशखान होश में आता है और बदला लेने के लिये वहांसे चलता है। सीन दूसरा। चक्कर और सफदर में बात चीत नौकर का आना, और चक्कर को खाना खिलाने के लिये ले जाना दिलरुबा का (जो कि शेरखान की लड़की है) आना सफदर का उसे छेड़ना, दिलरुबा और सफदर की बात चीत, दिलरुबा सफदर को सफदर का नौकर समझ कर बिगड़ती है, मगर बात चीत से जब उसे यह मालूम होता है कि यही असली सफदर है तो मागी मागती है, दोनों में मोहब्बताना बात चीत। सीन तीसरा। बांकेखान की मां का इस बात के लिये खुश होना कि लड़का शादी करके आता है। माहरू और बुढ़िया की बात चीत, माहरू का बुढ़िया पर नाराज होना, बुढ़िया बांकेखान पर इस बात के लिये खफा होना कि उसने ऐसे धोखे का काम क्यों किया। माहरू और बांकेखान की बात चीतमें माहरू से बांकेखान अपना अस्ली हाल बताता है। माहरू बांकेखान को बुराभला कहती है। मगर जब उसे यह मालूम होता है कि यह मुझे सच्चेदिल से चाहता है, बांके खान यह भी बताता है कि आतिशखान और हामिदखान नेही यह काम उससे कराया है और बांकेखान खुद भी अफसोस करता है हामिदखान का आना और अपनी अंगूठी हार और माहरू को मांगना। बांकेखान दो चीज देता है मगर माहरू के वास्ते बिगड़ता है, हामिद बांकेखान को खंजर से मारना चाहता है। माहरू आजाती है और हामिदखान को धोखा देकर खंजर ले लेती है।

और उसी खंजर से हामिदखान को मार डालती है । चौथा सीन । सफदर (जोकि चक्कर बनाहै) शेरखान की बात चीत, चक्कर (जोकि सफदर बनाहै) शादीका लेबास पहने आता है. और असली सफदर पर अपना रोब जमाता है । शेरखान उनकी तारीफ करता है, शेरखान और चक्कर में बात चीत । सादकखान का आना और मुफलिस से बात चीत । मुफलिस सादकखान को यह कह कर बहकाता है कि शेरखान बहरा है । सादक चक्कर का मारकर उससे शादीके लिबास पहनने का बाइस पूछता है । सफदर आता है, (चक्कर शादक के आजाने की वजह शादी रुक जायगी इसले पछताता है) और अपने को चक्कर और चक्कर को सफदर बनने का सबब बतलाता है । यह भी कहता है कि शेरखान मेरी शादी बजाय अपनी बेटी के दूसरी औरत की लड़की से शादी करना चाहता था । सादक उसे अपनी पसंद की हुई दुलहन के लाने के वास्ते कहता है । शेरखान और सादक की बात चीतमें असली राज का खुलना । मुफलिस का रमजू को बुलाकर लाना और दिलेरखान को भी लाना । दिलेरखान शेरखान का बेटा है यह जान कर सबका आपुस में मिलना । हामिद का आना और गुल चेहर का उससे मिलना । मुफलिस और चक्कर दोनों चंचल की बेटी दौलत से शादी करना चाहते हैं और आपुस में झगड़ते हैं । आखिर दिलेरखान यह फैसला करता है कि दौलत जिसे चाहे वही उससे शादी करे । सब इस बात पर राजी होते हैं । दौलत मुफलिस को पसंद करती है सब कोई खुसी का गा[illegible]ते हैं । सीन [illegible]वा । माहरू झोपड़ी में गाती हुई नजर आती है बांके खान आता है और उसे धोखा देने के लिये अफसोस करता है और खंजर इस लिये माहरू को देता है कि वह उसका सिर काट ले

मगर माहरू उसे समझाती है। बांकेखान के साथी लड़के आते हैं और बांकेखान उनके साथ एक तरफ जाता है। इस के बाद बुढिया माहरू के बाप के घरसे एक आदमी के आने की खबर देती है और आतिशखान आता है और अपने को जाहिर करता है। और माहरू को अपने साथ चलने के लिये कहता है, माहरू उसे फटकारती है आतिशखान उसे खंजर से धमकाता है, माहरू मदद के लिये पुकारती है। बांकेखान आता है, उसे आते देख आतिश भागता है भागती वक्त हामिदखान का कटा हुआ सर देखता है।

ड्राप सीन।

अंक तीसरा--सीनपहिला—जहाज पर बांकेखान चढ़ना चाहता है, और खलासी चढ़ानेसे इन्कार करता है, बांकेखान खलासी को ढकेल कर मय माहरू चढ़जाता है। सीन दूसरा। दौलत का गाते हुये दिखाई देना कासिम नामी एक शख्स का आना और दोनों की बात चीत उसके पीछे चक्कर का आना। दौलत कासिम को मुरगी के दरबे में छिपाती है। मुफलिस बाहरसे दरवाजा खोलाता है चक्कर घबराता है, दौलत त्रियाचरित्र करती है और दरवाजा खोल आती है और मुफलिस के सामने दोनों को निकाल देती है। तीसरा सीन। जंगल में माहरू आतिशखान के साथ नजर आती है और चिल्ला कर मदद मांगती है. एक तरफ से बांकेखान माहरू के बाप अशरफ और उसकी मांको लेकर उसकी मदद को आ पहुंचता है। अशरफ और आतिशखान की बात चीत में अशरफ को बांकेखान का असली भेद मालूम होजाता है। अशरफ बांकेखान को भला बुरा कहता है। बांकेखान का माहरू के नाम इकरार नामा लिखना, माहरू का उसे फाड़ डालना। अशरफ का अपने को करज मन्द जाहिर करना और माहरू से

किसी अमीरके साथ शादी करने के वास्ते कहना। आतिशखान को माहरू का फिटकारना सबका जाना। दिलेरखान का एक तिलस्मी अजदहे के घेरेमें फंस जाना। बांकेखान का आकर उस अजदहे को मारकर दिलेरखानकी जान बचाना। अजदहे के मरने से उस तिलस्म का टूट जाना और अजदहे दौलत का बांके खान को मिलती है। सीन चौथा। मुफलिस अपनी औरत के बद-चलनी परअफसोस करता है। मुफलिस आता है और वह चक्कर को अपनी औरत को आजमाने के वास्ते कहता है। मुफलिस चालों कीसे दौलत की बदकारी पकड़ता है और नाक काटने पर आमादा होता है, सिपाही आकर उसे ऐसा करने से रोकते हैं। मुफलिस दौलत को और दौलत मुफलिस को तलाक देते हैं, चक्कर दौलत को रखनेसे इन्कार करता है दौलत न इधर की होती है न उधर की। सीन पांचवां। माहरू बांकेखान के लिये और बापके कर्ज के लिये रंज करती नजर आती है। वालदा-माहरू और अशरफ माहरू को समझाते हैं आतिशखान आता है और बात चीत करके माहरू को शादी करने के लिये राजी कराता है। मगर तबीयत में यह ठान लेती है कि वालिद को रुपया मिलजानेके बाद खुदकुशी करके अपनी अशमत को बचाऊंगी। चक्कर के साथ बांकेखान भेष बदल कर आता है और अशरफ इन दोनों को मेहमान बनाकर रखता है पीछेसे बांकेखान माहरू के सामने जाहिर हो जाता है। आ-तिशखान उससे इस तरह छुपकर आनेका सबब पूछता है चक्कर धूप-छाँह का मतलब समझाता है, आतिशखान शादीके वास्ते जल्दी करता है, बांकेखान सब को रोककर अपना हक दिखाता है और आतिशखान से दूनी रकम देता है। आखिर वालदा माहरू और अशरफ बांकेखान के साथ माहरूकी शादी करने पर आमादा

होते हैं। आतिशखान बांकेखानके आगे झुकता है और माफी मांगता है, बांकेखान और माहरू की शादी फिरसे हो जाती है। सब कोई खुशी मनाते हैं। तमाशा खतम होता है ॥

असली

थियेट्रिकल—नाटक।

मय गाने और ड्रामे के

सरीफ बदमास	॥)
दुश्मने ईमान	॥)
काली नागिन	॥)
जहरी सांप	।≡)
महाभारत	।=)
शहीदे नाज	।=)
रुवावे हस्ती	।=)
असीरे हिर्स	।=)
खूबसूरत बला	।=)
भूल भुलइयां	।=)
सैदे हवस	।=)
दिल फरोश	।≡)
खूने नाहक	।=)
वीरेन्द्र बीर	।=)
मीठा जहर	।=)
मसहूर गवैया (थियेटर के गाने)	॥)
संगीन थियेटर (थियेटर के गाने)	।)

मिलनेका पता—जगन्नाथप्रसाद अरोड़ा
कल्पतरु प्रेस (पुस्तक बिभाग)
बनारस सिटी।

जरूरी बात।

प्रिय पाठकगण! ——

प्रायः पारसी लोग उर्दू बोल चालमें ही नाटक खेलते हैं, उसी के अनुसार यह नाटक भी उर्दू बोल चालमें लिखा गया है। नागरी अक्षरों में बिन्दी लगाये विना शुद्ध उर्दू शब्दका उच्चारण नहीं हो सकता, परन्तु भारतमित्र सम्पादक स्वर्गवासी बाबू लाल मुकुन्द जी गुप्त यह सिद्ध कर गये हैं, कि जो लोग उर्दू नहीं जानते वह लोग बिन्दी लगानेपर भी शुद्ध उच्चारण नहीं कर सके। इससे हिन्दीमें बिन्दी लगानेकी जरूरत नहीं। उन्ही के वाक्यके अनुसार इस पुस्तकमें भी बिन्दी नहीं लगाई गई है इसके लिये उर्दू के विज्ञ पाठक मुझे क्षमा करेंगे। और इसे सुधारकर पढ़ेंगे। और भी यदि प्रुफ देखनेमें तथा प्रेसके कर्मचारियोंकी असावधानता से यदि कहीं कोई गलती रह गई हो तो पाठकगण उसे क्षमा करेंगे।

विनीत—

प्रकाशक।

॥ श्रीः ॥

धूप-छाँह

अंक पहिला—परदा पहिला।

बगीचा।

(गाना सबका)

दावर तेरो नाम रटत हम नित कर तोरी आस सगरे।
सगरा जगत तोरा बन्दा हैगा बारी ताला ॥
मलक फलक माने तोरी बतिया।
हां कादिर कुदरत वाला, करतार तू है आला ॥
सबसे ग्यानी तू लासानी. बसर सजर हजर।
सगर ध्यानमें तेरे हैं जानसे तोहे पूजे सभी हम ॥

सहेली १—ऐ मेरी प्यारी बहेन माहरू, खुदा तुम्हें इस दुनियां की जहरीली आंखोंसे बचाये, तुम्हारे इस हुस्ने दिलकश पर किसी बद बातनकी नजर न लग जाये।

सहेली २—जो कोई एक मरतबा, ए प्यारी प्यारी सूरत देख पाये, तो उसे बे देखे चैन न आये।

सहेली ३---प्यारी, खुदाने तुम्हें वो हसीन बनाया है, कि इस पर तुम जितना नाज करो बजाहै बजा है।

माहेरू--तुम सच कहती ,हो, मुझे अपने हुस्नपर यकीन है और मेरी अम्माजान भी मुझको बार बार प्यार करके कहती हैं, कि बेटी तू बड़ी हसीन है, शाहेजादियों से काबिले मसनद नशीन है।

वालदा--आहा कैसी मेरीबेटी है सूरते मकबूल जैसे गुलाब का फूल।

तू बादशाहे हुस्न है प्यारी जहान में।
शादी तेरी करूंगी किसी खानदान में ॥

माहेरू--अम्माजान, क्या मैं वाकई हसीन हूं, शाहेजादीसे काबिले मसनद नशीन हूं।

वालदा--बेटी तू वो रश्के चमन है, कि गुलशन तेरा दीवाना है, दीदये नरगिस, मिसाले नरगीसे मस्ताना है, सब बंदा है तेरा बुल बुले कहरे खोदा है, गुलेतर परवाना है।

नौकर---बानूसाहबा, कोई आतिशखान नामी ताजर है, उसका नौकर आपसे मिलनेके लिये डेवढ़ी पर हाजिर है?

वालदा-अच्छा आने दो, मुआ आतिशखान तो पीछा छोड़ताही नहीं, अपनी जिदसे मूं मोड़ताही नहीं, मगर जबके मेरा दिल न चाहेगा तो क्या जबरदस्ती व्याह ले जायगा ?

आतिशखान---बंदगी अरज है हुजूर, आहा कैसी है रश्के हूर।

वालदा--क्या तू आतिशखानके तरफसे आया है ?

आतिशखान जी हां ?

वालदा--अच्छा आतिशखानसे जाकर कह दे कि वो मेरी बेटीका खयाल दिलसे दूर करे, मेरी माहेरू तो किसी नव्वाब

या शाहेजादेके महलमें आराम पायेगी, ऐसे मुफलिस बजारी भिखारीके झोपड़ेमें न जायगी।

आतिशखान--वाह वाह, ये बुढ्ढी तो बात बातमें सौबात सुनाती है, । मुफलिस, बाजारी, भिखारी, क्या एक शरीफ सौदारकी तारीफ है सारी ।

वालदा--और क्या बैपारी ? सौदा बेचनेवालोंका काम है, कि कौड़ियां गिनना, दमड़ी अद्धी का हिसाब जोड़ना, चार पैसेके लिये हजारों तदबीरें लड़ाना ।

कभी ऐसे रजीलोंसे न निसबत इसकी चाहूंगी ।
किसी नव्वाब या शाहेजादेसे इसको बिवाहूंगी ॥

आतिशखान--बानूसाहेबा ! आपको मालूमहै कि इस जमाने में नामके कितने अमीर हैं मगर इन दामके फकीर नव्वाबों से कौड़ियां गिनने वाला हजार दरजे बेहतर है ।

वालदा--कर नहीं सकती है कौड़ी हमसरीकी हमसरी।

आतिशखान---कौड़ी कौड़ी जोड़कर होती है आखिर अशरफी ।

वालदा--बस जियादा शेखी न बघार ।

माहरू--अगर तेरा आकाहै मालदार तो इससे क्या हमे सरोकार ।

सहेली१--बंदरके गलेमें मोतियोंका हार,(सब)अहा हा हाहा,

सहेली२--जरा बनवाइयेमूं अपना, वो सूरत और ये सौदा, वो शय बन्दर खरीदे क्या जो हो नव्वाबके काबिल ।

सहेली ३---कहां बनिया ए गंगा कहां वे भोज राजा है, कहां बनियेको जेवा है जोहो नव्वाब के काबिल ।

सहेली ३—छंछूदर लगाये चमेली का तेल, यह कैसा खेल, नहीं कुंजड़ेसे इसका मेल, जोहो नव्वाबके काबिल ।

आतिशखान---कैसी मगरूर है, नशेमें चूर है, जाहिरमें नूर है, बातनमें नार है, जिसका मजकूर है, वो एक मशहूर है, नूरसे मामूर है, ताजर सरदार है ।

सहेली १---ताजर अमीर हो, वाली जागीर हो चाहे फकीर हो, उनकी पैजार से ।

सहेली २---कैसे ये मजूर हो, घुलपे जंबूर हो, बेहतर दूर हो कौवा गुलजारसे ।

सहेली ३—वो रश्के तूर है, माहे पुरनूर है जन्नतकी हूर है, मिलना दुशवार है ।

सहेली २---वो बेशऊर है, अदना मजदूर है, शक्ले लंगूर ह, आना बेकार है ।

आतिशखान---क्या आपकी तरफ से यही जवाब है ।

वालदा---बस यही इन्तेखाब है ।

आतिशखान---क्या उसकी मेहनतका यही सिला है ।

वालदा---जिस जवाबके लायक था वोही उसे मिला है ।

आतिशखान---अगर मेरी जगह यहां आतिशखान होता तो उसका क्या होता ?

वालदा—जो हाल तेरा हुआ है वोही उसका भी होता ।

माहरू—बलके इससे भी जलीलो रुस्वा होता ।

आतिशखान---ओ नादान, तुझे क्या है पहचान, कि मैं वहीहूं आतिखशान ।

सहेली १—ऐ कहां से आते हैं भूखे बंगाली, कि दौड़ते दौड़ते अपनी एड़ियां और हमारे दरवाजेकी चौखट घिस डाली ।

आतिशखान—अच्छा, इनकी ये शरारत और मेरी ये हिका
हां अब मैं जाता हूं, और इस जिल्लतो सगूनके सब हाल
सुनाता हूं मगर याद रखना कि वह जरूर तुझसे बदला लेगा।
बालदा—अरे जाभी वह मेरा क्या करेगा।

ऐसे यहां पै सैकड़ों आये चले गये।
कुछभी लो जरका जोर देखाये चले गये॥
कुछ हाले दिलका शौक सुनाये चले गये।
पाकर जवाब सरको झुकाये चले गये॥

गाना सहेलियां।

बाहरे वाह, वाहरे वाह, वाह, वाह वाह।
कुंजी ताला बेचने वाला, सूई धागा बेंच तूजा॥
मूंकर काला बेचतू जा, बाहरे बाह।
यहां तो सैकड़ों तुझसे गुलाम आते हैं॥
पयाम शादीका हर सुबहो शाम लाते हैं।
मगर मुराद वो कब अपने दिलकी पाते हैं॥
योंही जलील हो नाकाम यहां से जाते हैं॥

आतिशखान—अच्छा अच्छा देख लूंगा।

बो दिया तुमने शरारत दिल में शर पैदा हुआ।
आतिशे कोहना भड़क उठा उसका शरर पैदा हुआ॥
जब कजा चूंटी की आई उसको पर पैदा हुआ।
इन्तेकामे दुश्मनी का सिल सिला पैदा हुआ॥

आज तेरे वास्ते एक अजदहा पैदा हुआ ।

माहरू--आ जा बहोत न टर्रा बंद कर अपनी जबानका कड़ा ।

सहेली १--बल बला तेरा गरा, चल पकड़ अपना घड़ा ।

सहेली २-- हम भेजते हैं तुझपर तबर्रा ।

आतिशखान--अच्छा अच्छा मैं सब देख लूंगा ॥

कासिद--इस गुलिस्तान की बेगम को पहोंचे मेरा सलाम, कौन है वह गुल कि जिसका माहेरू कहते हैं नाम ।

सहेली१--हैं हैं ये कौन है मुआ जरा देखना ।

कासिद--वाह पहली बिसमिल्लाहही गलत अरे तू अपने नाज पर इतराती है. सच है, कि जिसकी आंख में चरबी छाती है, उसे भैंसकी बकरी नजर आती है ।

सहेली१-- अरे तू कौन है यहां क्या भीख मांगने आया है ।

कासिद--अजी है न कोई बेनवा नामी शकीन ।

सहेली २--हां हां फिरतो कोई चोर है बिला यकीन ।

कासिद--भला तुममें क्या लाल लगे हैं जो चुरा ले जाऊंगा । शायद यह तुम में बद गुमानी है कि तुम में से किसी एक को उड़ा ले जाऊंगा ।

माहरू--अरे ये क्या बेहूदा तकरार है, क्यों ऐ लड़के तुझे यहां आनेसे क्या सरोकार है ।

कासिद--जी मैं एक नव्वाब आलीशान का भेजा हुआ आया हूं और आपके नाम एक नामा लाया हूं ।

माहरू--हैं, मेरे नामका नामा क्या किसी नव्वाबके यहां से लाया है ।

सहेली १--लो प्यारी अब किसमत चमकने लगी तुम्हारी ।

सहेली २--जरूर कोई नव्वाब दिल फिगार है शादी का उम्मीद वार है।

माहरू--भला वह कौन नव्वाब आलीशान, उसका कुछ पता निशान।

कासिद--अजी वोही मशहूर महरूम बागबान का फरजन्द बांकेखान।

माहरू--क्यों ओ जंगली पागल जलीलो ख्वार।

सहेली ३--क्या वह कुछ नौकरी काहै ख्वास्त गार।

कासिद--नौकरी नहीं उसको दरकार है, अय आली मोकाम, आपको उसने दिया है अपनी शादी का पैगाम।

सहेली १--क्या कहा शादी कापैगाम॥

" २--क्या कहा शादीका पैगाम।

माहरू--क्या कहा ओ गुस्ताख बेहूदे गुलाम, शामत आई है जो करता है ऐसे कलाम।

सहेली३--लो बीबी सब चले ताने हैं तेरे मकान तक। अमीरो मुफलिस व पीरो जवान तक।

सहेल ४--नहीं जिसकी खबर नामों निशांतक।

तो हैं मुस्ताक शादी के यहां तक॥

सहेली १--हुई है रस्के गुल शोहरत यहां तक॥

कि तालिब हैं तुम्हारे बागवां तक।

माहरू--अरे क्या तुम सब छेड़ने को तैयार हो बुआ, कुरबान हुआ वो बागवां मुआ, वो मूं और मसूर की दाल, मुफलिस के गाल और मुझसे शादी का सवाल, फिलहाल इस खत को करती हूं पामाल।

सहेली ४—हैं हैं ठहरो बीबी, इस बातका गुस्सा क्या अगर तमाम दुनियाके लोग तुमसे शादी करना अच्छा समझें तो बुरा क्या है, इस खतको पढ़कर देखें कि इसमें लिखा क्याहै।

सहेली १—२—हां हां देखें तो लिखा क्या है।

खत पढ़ती है अय मेरी प्यारी माहरू, दिल तुझ पै निसार, हजार जानसे होने को हूं तैयार (तुज पर फिट कार हजार वार) जबमैं घुटनेके बल चलता था उस जमाने से तुम्हारा आशिके जार हूं।

सहेली २—लो बीबी येतो तुम्हारे पैदायशी आशक निकले।

सहेली १—मगर मैं जब तुझे अपनी झोपड़ में लाऊंगातो इस झोपड़ी को छोड़ जन्नत में चला जाऊंगा ॥

माहरू—जन्नत में तो नहीं मगर जहन्नम में जरूर जायेगा।

सहेली १—राकिम आपका दिलबादा नव्वाब वांकाखान बुलन्द इरादा (अरे एतो है कोई सिड़ी दौसाई)

सहेली १—२—फरहादका चचा, और मजनूंका भाई।

माहरू—ऐसा गुस्सा आता है, कि इस खतको फाड़कर चूल्हे में डालदूं।

कासिद—अरे हैं हैं ए क्या कहा इस खतका जवाब तो लाव, अच्छा हिसाब, न कासिदकी खातिरी, न मेहमानी न कद्र दानी।

सहेली १—क्या तेरी भी करें मेहमानी, तो आव मैं तुझे खिलाती हूं पोलांव, और गोबरकी बिरयानी ॥

कासिद—अरे हैं हैं कैसी मेहमानी, छोड़ मेरा कान उखड़ेगा ओ शैतान की नानी!

सहेली १—नहीं नहीं पहले मेरी दावत कुबूल फरमाइये,

इसी तरह नाक की सींध से चले आइये ।

सहेली २—भाई नहीं पहले मेरी दावत कुबूल फरमाइये इसी तरह नाक की सींध से चले आइये ।

माहरू—क्यों कुछ और सोडा वाटर शरबत भी पियेगा ।

कासिद—नहीं नहीं कुछ नहीं चाहिये बकसवी बिल्ली चूहा लंडोराही चंगा है। ओ मेरीमां मैं किस हिसाबमे पड़ा ।

सहेली १—अरे मुआ चिकना घड़ा, इतने जूतोंका मेह पड़ा, अभी तक सूखेका सूखा है पड़ा ।

गाना सबका ।

जारे जारे जाजा जारे जारे जाजा ।
छोड़ सयतान की नानी तू छोड़ मेरा कान ॥
अय छोड़ मोरी मैया, मै मुआ मेरी दैया ।
मैं पड़ूं तेरी पैया, हां हां मेरी बुआ ॥
तू धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका ।
जारे अवारे निकल तूं जा जा जारे जारे जा० ॥

अंक पहिला—परदा दूसरा ।

(जंगल)

अफसर—शिकार-शिकार ।

डाकू-१-कहां किधर ।

„ २—लाव मेरी तलवार ।

„ ३—लाव मेरी बन्दूक ।

,, २--कितने आदमी हैं।

,, १--एक बुड्ढा सरदार उसके कमरमें तलवार।

अफसर--जब तो हथियारों से होकर तैयार करो इसका शिकार।

हामिद—कैसी मेरी हुई तकदीर कहां मैं सादी करने जा रहा था कहा मैं लुटेरों के फेर में आ फंसा। अब मेरा हरीफ सफदर मुझसे पहिले पहोच जायगा और मेरी आइन्दा होनेवाली गुलजार को अपनी बीबी बनायेगा और मेरी जिन्दगी खाक में मिलायेगा।

मुफलिस—अहाहा ये सबके सब पागल दौड़ धूप मार लूट तलवार पिस्तौल बन्दुक का वबाल एकीनन इनका हावाल अगर ये बन्दा भी डाकूओं के क्लुब का मेंबर है मगर अपना तरीका सबसे अलग और बेहतर है मैं वो चलता पुरजा हुं कि सफाई का फंदा लगाता हुं और धोखे की टट्टीमें मुये ताजे शिकार को फंसाता हुं एक शिकार तो यह मौजूद है जरा टटोल कर तो देखूं इसमें भी कोइ दम दरूद है।

हामिद--अरे ओ मियां।

मुफलिस--दूर क्यों जाउ एक बेचारे को तो यही बांध रक्खा है बस आज कल में इसका भी फैसला होन वाला है।

हामिद--अरे ओ भाई।

मुफलिस--मेरा तो यहां गुजर नहीं, अरे बाबा डाकू है तो क्या दिलमें रहम का नाम भी नहीं जो बिचारा भूला भटका आया उसको सीधा मुल्के अदम का रस्ता बताया।

हामिद—अरे भाई तुम किसकी जिकर कर रहे हो।

मुफलिस--तो क्या ये बातें आपने सुनी ओहो हुं हु बहोत बुराहुआ

हामिद---तो क्या मेरे कत्लका मशवरा हुआ।

मुफलिस---जी हां।

हामिद—तो क्या मैं मारा जाऊंगा ।

मुफलिस—सरदारके कहने में कि तुम इस शहर के नजदीक कोई गुलबैर नामी लड़की के साथ शादी करने को जा रहे हो ।

हामिद—मगर तकदीर ने यहां फंसा दिया ।

मुफलिस—बल्कि तुम्हें मुल्के अदम का रास्ता बतादिया ।

हामिद—और भाई तुम्हारे सरदार ने तो मुझे छोड़ देने का वायदा किया है ।

मुफलिस—अजी भला लुटेरों की बातका क्या एतबार है ।

हामिद—भाई तू मुझे रहम दिल मालूम होता है अगर तू मुझे छोड़ देगा तो मैं तेरा एह सान कभी न भूलूंगा ।

मुफलिस—एहसान न भूलूंगा, जबतो जरूर इसके पास कुछ न कुछमाल होगा, क्या करूं छोड़ दूं बिचारे का बाप गरीब बुढ्ढा है और उसका यह एक ही बेटा है ।

हामिद—हां भाई मेरा बाप बुढ्ढा है मगर गरीब नहीं ।

मुफलिस—क्या कहा गरीब नहीं तो जरूर माल दार होगा ।

हामिद- भाई तू मुझसे सौ असरफी लेले और मुझको छोड़दे ।

मुफलिस—या अल्लाह सौ असरफी तब तो मैं अभी छोड़े देता हूं ।

दिलेर खान—खबरदार ।

मुफलिस—अरे बापरे ! आई कजा, सरदार तो आन पहोंचे अब बातको उड़ाना चाहिये, वाह जी वाह तो क्या मैं छोड़ दूं और रिशवत लेकर अपने मालिकसे निमक हरामी करूं ? वाह जी वाह सूरतसे तो आप अशराफ आदमी मालूम देते हैं ।

दिलेर खान—क्या क्या ?

मुफलिस—कौन आप हैं ! आदाब अरज है, जनाब देखिये

य आदमी मुझे रिशवत देकर भाग जानेकी कोशिश कर रहा है ।

दिलेरखान--चलाजा, ओ नाहिन्जार ।

मुफलिस--ओह, खूब सरकार ।

तकदीर खुलते खुलते हमारी बदल गई ।
इस हात में आके अशरफी निकल गई ॥

दिलेर खान—क्यों जी कहो अब क्या है इरादा ?

हामिद—अजी मैं तो हूं जान देने पर आमादा, अगर आप मर्द हों तो पूरा कीजिये अपना वायदा !

दिलेर खान— वायदा कौनसा ?

हामिद—वोही !

दिलेर—रेहाई दिलाने का ?

हामिद—जीहां और गुलखेरसे मिलानेका !

दिलेर खान—हां हां, जो मैंने कहा है वह पूरा करूंगा, चल आ मेरे साथ, ये बेचारा नहीं जानता के मैं क्यों करता हूं इससे भलाई, क्यों कि मैं हूं हकीकी गुलखेरका भाई ।

सफदर—चक्कर, चक्कर ?

चक्कर—अलहमां, जान जाने का है सामां !

सफदर—चक्कर चक्कर ?

चक्कर—जीहां मैंतो हो गया हूं घनचक्कर ।

सफदर—गजब की बात है शबे तारीक जंगल है: ए शेरोंका
यहां दहशत से शोहरा आब होता है दिलेरों का ॥

चक्कर--अजी यह शेरोंकाही नहीं मुकाम है, बल्के डाकुओंका भी जाये कयाम है ?

सफदर--क्या डाकू ?

चक्कर—जी, हां ?

मुफसिल--एक यहां भी बैठा है पराया माल ताकू ?

सफदर--अरे घरसे तो प्यारी गुलखेरसे सादी करने नेकले थे।

चक्कर--मगर यहां तो जानके लाले पड़ गये।

मुफसिल--यह क्या दूसरा, जिसराह जिसको देखो गुलखेरका ख्वास्तगार एक तो हामिद दूसरा यह !

चक्कर--अरे बापरे वह आ पहोंचे अब क्या करना जाहिये ?

अफसर--देखता क्याहै उड़ादे सर।

डाकू १--चल बुड्ढे इधर फिर।

रमजू--मन बरन।

डाकू--१--झुकादे गरदन।

शेरखान--अय नीचपेशा अख्तियार करने वालों जुल्मो दगाकी कमाईसे पेट भरने वालों अगर मैदानेजंगमें जंगी हथियार धोकेसे न लिया जाता तो तुम जैसे लोमड़ी जवानोको खाको खूनमें मिला देता।

रमजू--ओहो, दम और ऐठना।

शेरखान--क्या तुम पहिले नहीं जान्ते थे कि मैं कौन हूं ?

रमजू--कौन ?

शेरखान--मैं यहांकी फौजका कप्तान शेरखान !

चक्कर--क्यों जी आपने सुना बड़े मियां का बयान ?

सफदर--कौन बड़ा होने वाला ससुरा शेरखान ?

चक्कर--कौन।

सफदर--अब क्या तदबीर अमलमें लाना चाहिये ?

चक्कर--बस अब शोरोगुल कर उनको यहां से भगाना चाहिये।

ये आदमी मुझे रिशवत देकर भाग जानेकी कोशिश कर रहा है ।

दिलेरखान--चलाजा, ओ नाहिन्जार ।

मुफलिस--ओह, खूब सरकार ।

तकदीर खुलते खुलते हमारी बदल गई ।
इस हात में आके अशरफी निकल गई ॥

दिलेर खान—क्यों जी कहो अब क्या है इरादा ?

हामिद—अजी मैं तो हूं जान देने पर आमादा, अगर आप मर्द हो तो पूरा कीजिये अपना वायदा !

दिलेर खान– वायदा कौनसा ?

हामिद—वोही !

दिलेर—रेहाई दिलाने का ?

हामिद—जीहां और गुलखेरसे मिलानेका !

दिलेर खान—हां हां, जो मैंने कहा है वह पूरा करूंगा, चल आ मेरे साथ, ये बेचारा नहीं जानता के मैं क्यों करता हूं इससे भलाई. क्यों कि मैं हूं हकीकी गुलखेरका भाई ।

सफदर—चक्कर, चक्कर ?

चक्कर—अल्लहमां, जान जाने का है सामां !

सफदर—चक्कर चक्कर ?

चक्कर—जीहां मैंतो हो गया हूं घनचक्कर ।

सफदर–गजब की बात है शबे तारीक जंगल है. ए शेरोंका
यहां दहशत से शोहरा आब होता है दिलेरों का ॥

चक्कर--अजी यह शेरोंकाही नहीं मुकाम है, बल्के डाकुओंका भी जाये कयाम है ?

सफदर--क्या डाकू ?

चक्कर—जी, हां ?

मुफसिल--एक यहां भी बैठा है पराया माल ताकू ?

सफदर--अरे घरसे तो प्यारी गुलखेरसे सादी करने निकले थे ।

चक्कर--मगर यहां तो जानके लाले पड़ गये ।

मुफसिल--यह क्या दूसरा, जिसराह जिसको देखो गुलखेरका ख्वास्तगार एक तो हामिद दूसरा यह !

चक्कर--अरे बापरे वह आ पहोंचे अब क्या करना जाहिये ?

अफसर--देखता क्याहै उड़ादे सर ।

डाकू १--चल बुड्ढे इधर फिर ।

रमजू--मन बरन ।

डाकू--१--झुकादे गरदन ।

शेरखान--अय नीचपेशा अख्तियार करने वालों जुल्मों दगाकी कमाईसे पेट भरने वालों अगर मैदानेजंगमें जंगी हथियार धोकेसे न लिया जाता तो तुम जैसे लोमड़ी जवानोको खाको खूनमें मिला देता ।

रमजू--ओहो, दम और ऐठना ।

शेरखान--क्या तुम पहिले नहीं जान्ते थे कि मैं कौन हूं ?

रमजू--कौन ?

शेरखान--मैं यहांकी फौजका कप्तान शेरखान !

चक्कर--क्यों जी आपने सुना बड़े मियां का बयान ?

सफदर--कौन बड़ा होने वाला ससुरा शेरखान ?

चक्कर--कौन ।

सफदर--अब क्या तदवीर अमलमें लाना चाहिये ?

चक्कर--बस अब शोरोगुल कर उनको यहां से भगाना चाहिये ।

रमजू—क्या कहा शेरखान यहां के फौजका कप्तान ?

शेरखान—हां शेरखान यहां की फौजका कप्तान !

रमजू—बस हाथ रोको हमारे सरदारने इस नामके आदमी को इजा देने की मुनादी की है ?

चक्कर—खबरदार होशियार सरदार वगैरह शेरखान हम आ पहोंचे आपही की फौजके जवान।

रमजू—अरे भागो भागो इसका कोई आदमी आ पहोंचा।

चक्कर—वगैर दोस्त।

मुफलिस—अहा कैसे मौकेपर मैंभी आ पहोंचा जो एक शरीफ आदमी की जान बचाई। मगर साहब आपको कहीं चोटतो नहीं आई।

शेरखान—नहीं नहीं तो क्या शोरोगुल करके जवान को आपहीने भगाया था ?

मुफलिस—जी हां वो शेरोगुल तो मैंने मचाया था !

शेरखान—वाह शाहब तो आपने अच्छी अकल मंदी की है लीजिये उसके एवजमें ए पाकेटमें है कुछ रुपये और नोट।

मुफलिस—अजी मुझसे क्या रुपयों की बोट है, हाय हाय रुपयोंके नामसे तो मेराजी होगया लोट पोट है।

शेरखान—जी नहीं यह तो आपको लेना हीं पड़ेगा।

मुफलिस—तो बन्दा कब छोड़ेगा, जब आपकी यही मरजी है, तो बिसमिल्लाह, अरे सामनेसे तो कोई आता है !

सफदर—चोर पाजी बदमाश !

शेरखान—जीहां थे तो वाकई नाहक सनास, जरा आप इधर तो आइये, वो मेरी जाकेट के पाकेट मेंसे वह लाकेट तो लाइये।

मुफलिस--अरे पाकट तो इसने मुझे दी है इसके गले क्यों पड़ता है।

सफदर--हैं, पाकेट ?

शेरखान--मैंने आपको पाकेट दीथी न !

सफदर--आपने मुझे पाकेट कब दीथी ?

शेरखान--आप इतने जल्दी भूल गये।

सफदर--हैं, ये आप क्या कहते हैं ?

शेरखान--ऐसे दिलेर होकर इस कदर लोभी !

सफदर--मगर वो मेरे पास हो भी ?

शेरखान--क्या तुम यह जानते हो कि वो पाकेट मैं तुमसे [ल]गा नहीं नहीं सिर्फ इसमें से एक लाकेट लूंगा ?

सफदर--अरे ए कैसी कटकट--जाकेट--पाकेट और-पाकेट [में] लाकेट !

शेरखान--उसमें है मेरी प्यारी प्यारी बेटीकी तसवीर !

सफदर--बापरे येतो मामलाही बढ़ता चला। एकमें से [ए]क निकलताही चला ! जाकेट में पाकेट पाकेट में लाकेट [औ]र उसमें तसवीर, बड़े मियां मैं नहीं समझा ये आपकी [त]करीर।

शेरखान--अजी मैंने वो पाकेट आपको दीथी न ?

सफदर--अरे ये बुड्ढा तो गले पड़ निकला !

शेरखान--क्या मैं गले पड़ हूं ?

सफदर--फेर क्या !

शेरखान--खैर इसने मेरी जान बचाई इस लिये जो कुछ [क]ो सुन लेना चाहिये।

सफदर--अजी जनाब बुढापेके वजहसे आपकी अकल [में] आगया है फतूर !

रमजू—क्या कहा शेरखान यहां के फौजका कप्तान ?

शेरखान—हां शेरखान यहां की फौजका कप्तान !

रमजू—बस हाथ रोको हमारे सरदारने इस नामके आदमी को इजा देने की मुनादी की है ?

चक्कर—खबरदार होशियार सरदार वगैरह शेरखान हम आ पहोंचे आपही की फौजके जवान।

रमजू—अरे भागो भागो इसका कोई आदमी आ पहोंचा।

चक्कर—वगैर दोस्त।

मुफसिल—अहा कैसे मौकेपर मैंभी आ पहोंचा जो एक शरीफ आदमी की जान बचाई। मगर साहब आपको कहीं चोटतो नहीं आई।

शेरखान—नहीं नहीं तो क्या शोरोगुल करके जवान को आपहीने भगाया था ?

मुफसिल—जी हां वो शेरोगुल तो मैंने मचाया था !

शेरखान—वाह शाहब तो आपने अच्छी अकल मंदी की है लीजिये उसके एवजमें ए पाकेटमें है कुछ रुपये और नोट।

मुफलिस—अजी मुझसे क्या रुपयों की बोट है, हाय हाय रुपयोंके नामसे तो मेराजी होगया लोट पोट है।

शेरखान—जो नहीं यह तो आपको लेना हीं पड़ेगा।

मुफलिस—तो बन्दा कब छोड़ेगा, जब आपकी यही मरजी है, तो बिसमिल्लाह, अरे सामनेसे तो कोई आता है !

सफदर—चोर पाजी बदमाश !

शेरखान—जीहां थे तो वाकई नाहक सनास, जरा आप इधर तो आइये, वो मेरी जाकेट के पाकेट मेंसे वह लाकेट तो लाइये।

मुफलिस—अरे पाकट तो इसने मुझे दी है इसके गले क्यों पड़ता है ।

सफदर—हैं, पाकेट ?

शेरखान—मैंने आपको पाकेट दीथी न !

सफदर—आपने मुझे पाकेट कब दीथी ?

शेरखान—आप इतने जल्दी भूल गये ।

सफदर—हैं, ये आप क्या कहते हैं ?

शेरखान—ऐसे दिलेर होकर इस कदर लोभी !

सफदर—मगर वो मेरे पास हो भी ?

शेरखान—क्या तुम यह जानते हो कि वो पाकेट मैं तुमसे लूंगा नहीं नहीं सिर्फ इसमें से एक लाकेट लूंगा ?

सफदर—अरे ए कैसी कटकट—जाकेट—पाकेट और-पाकेट में लाकेट !

शेरखान—उसमें है मेरी प्यारी प्यारी बेटीकी तसवीर !

सफदर—बापरे येतो मामलाही बढ़ता चला । एकमें से एक निकलताही चला ! जाकेट में पाकेट पाकेट में लाकेट और उसमें तसवीर, बड़े मियां मैं नहीं समझा ये आपकी तकरीर ।

शेरखान—अजी मैंने वो पाकेट आपको दीथी न ?

सफदर—अरे ये बुड्ढा तो गले पड़ निकला !

शेरखान—क्या मैं गले पड़ हूं ?

सफदर—फेर क्या !

शेरखान—खैर इसने मेरी जान बचाई इस लिये जो कुछ हो सुन लेना चाहिये ।

सफदर—अजी जनाब बुढापेके वजहसे आपकी अकल में आगया है फतूर !

रमजू—क्या कहा शेरखान यहां के फौजका कप्तान ?

शेरखान—हां शेरखान यहां की फौजका कप्तान !

रमजू—बस हाथ रोको हमारे सरदारने इस नामके आदमी को इजा देने की मुनादी की है ?

चक्कर—खबरदार होशियार सरदार वगैरह शेरखान हम आ पहोंचे आपही की फौजके जवान।

रमजू—अरे भागो भागो इसका कोई आदमी आ पहोंचा।

चक्कर—वगैर दोस्त।

मुफलिस—अहा कैसे मौकेपर मैंभी आ पहोंचा जो एक शरीफ आदमी की जान बचाई। मगर साहब आपको कहीं चोटतो नहीं आई।

शेरखान—नहीं नहीं तो क्या शोरोगुल करके जवान को आपहीने भगाया था ?

मुफलिस—जी हां वो शेरोगुल तो मैंने मचाया था !

शेरखान—वाह शाहब तो आपने अच्छी अकल मंदी की है लीजिये उसके एवजमें ए पाकेटमें है कुछ रुपये और नोट।

मुफलिस—अजी मुझसे क्या रुपयों की वोट है, हाय हाय रुपयोंके नामसे तो मेराजी होगया लोट पोट है।

शेरखान—जी नहीं यह तो आपको लेना हीं पड़ेगा।

मुफलिस—तो बन्दा कब छोड़ेगा, जब आपकी यही मरजी है, तो बिसमिल्लाह, अरे सामनेसे तो कोई आता है !

सफदर—चोर पाजी बदमाश !

शेरखान—जीहां थे तो वाकई नाहक सनास, जरा आप इधर तो आइये, वो मेरी जाकेट के पाकेट मेंसे वह लाकेट तो लाइये।

मुफलिस—अरे पाकट तो इसने मुझे दी है इसके गले क्यों पड़ता है ।

सफदर—हैं, पाकेट ?

शेरखान—मैंने आपको पाकेट दीथी न !

सफदर—आपने मुझे पाकेट कब दीथी ?

शेरखान—आप इतने जल्दी भूल गये ।

सफदर—हैं, ये आप क्या कहते हैं ?

शेरखान—ऐसे दिलेर होकर इस कदर लोभी !

सफदर—मगर वो मेरे पास हो भी ?

शेरखान—क्या तुम यह जानते हो कि वो पाकेट मैं तुमसे लूंगा नहीं नहीं सिर्फ इसमें से एक लाकेट लूंगा ?

सफदर—अरे ए कैसी कटकट—जाकेट—पाकेट और-पाकेट में लाकेट !

शेरखान—उसमें है मेरी प्यारी प्यारी बेटीकी तसवीर !

सफदर—बापरे येतो मामलाही बढ़ता चला । एकमें से एक निकलताही चला ! जाकेट में पाकेट पाकेट में लाकेट और उसमें तसवीर, बड़े मियां मैं नहीं समझा ये आपकी तकरीर ।

शेरखान—अजी मैंने वो पाकेट आपको दीथी न ?

सफदर—अरे ये बुड्ढा तो गले पड़ निकला !

शेरखान—क्या मैं गले पड़ हूं ?

सफदर—फेर क्या !

शेरखान—खैर इसने मेरी जान बचाई इस लिये जो कुछ हो सुन लेना चाहिये ।

सफदर—अजी जनाब बुढापेके वजहसे आपकी अकल में आगया है फतूर !

शेरखान—हां भाई जरूर, जरूर, भला वो शोरोगुल करके चोरों को किसने भगाया था ?

सफदर—जी हां वो शोरो गुलतो मैं ने ही मचाया था !

शेरखान—बस बस देखा, इसने पाकटले लिया और साफ इनकार किया।

सफदर—अर्जी जनाब आप मुझे पहचानिये और नहीं पहचाना तो अब जानिये !

शेरखान—तुम कौनहो ?

सफदर—मेरीही शादीसे आपकी मिलेगी मुराद, मैं हूं आपका सफदर दामाद !

शेरखान—क्या तुम मेरे दमाद सफदर ?

सफदर—जी हा बंदा परवर !

शेरखान—चलो खैर गुजरी यहीं तुम्हारा इम्तेहान भी हो गया ?

सफदर—मेरा इम्तेहान किस बातका !

शेरखान—इस बातका कि तुम हो दिलेर, मगर पसेके हो लोभी, खैर मुझको तो पैसा उड़ानेवाले दामादसे कंजूस ज्यादे पसंद हुआ !

सफदर—अरे इसकी तो अलकका दरवाजा ही बन्द है। घड़ी में होशियार, घड़ी में दीवाना, इसकी बातों का नहीं है कुछ ठिकाना, खैर चलो।

मुफलिस—अहाहा, कैसा हूं इलमे फितरत का उस्ताद, कि ससुरे दामाद में कैसी डाली उफताद, ससुरे की निगाह ने दामाद को लालची वो लोभी बनाया, और दामाद की निगाह ने ससुरे को दीवाना वो पागल ठहराया।

गाना

पुतला बलाका हूं, चलता पुरजा मैं हूं बला ।
क्या फांसा मेरा आला अय वाह वाह वाह ।
मैं सोनेकी चिड़िया का फांसू गला ।
जी फंदा हो बंदेका दाम बला ।
पुतला बलाका हूं बना ।
ऐसेसे बन जाऊं तैसा, धोखेसे जत लाऊं कैसा ।
कोई होवे ऐसा वैसा, पाजी लुच्चा शोहदा ॥
फांसू उसको घातमें मैं बात बातमें ।
पुतला बलाका हूं ।

अंक पाहिला—परदा तीसरा ।

रास्ता

आतिशखान—उफ, जिल्लत, शरमिन्दगी किसके हाथसे, एक नफरत जदा खुदपसन्द लड़कीके हाथसे, एक बनिये बेदाद जुल्मो जफाकश लड़कीके हाथसे, ओ नादान लड़की अब मुश्किल है मेरे वारका संभालना, इस खंजरसे चाक करूं तेरा सीना, उफ, कीना, कीना ।

किबरो नखवत को तेरे गर मैं मिटा दूं तो सही ।
मुफलिसीके जालमें तुजको फंसादूं तो सही ॥

बदला तेरी बेरुखी का भी दिखादूं तो सही ।
सारी दुनिया में तुझे रुस्वा बनादूं तो सही ॥
ठोकरें दर दर की तुजको मैं खिलादूं तो सही ।
खाक में तेरी जवानी को मिलादूं तो सही ॥

हामिद—आतिशखान ये किसकी जवानी खाक में मिलाते हो ?

आतिशखान—उसकी, जिसको मैंने मोहब्बत का हार पहनाने की कोशिश की थी ।

हामिद—वो कौन बे सरवत है ?

आतिशखान—वो एक मगरूर बदबख्त औरत है, जिसके हुस्न की तमाम शहरों में शोहरत है ?

हामिद—आहा हाहा, अब मैं समझा, क्या उस बुड्ढे जिमींदार की बेटी, माहरू ?

आतिशखान—हां, हां, वोही बदबख्त हमें करती है बेआबरू । तलवार से खंजर होकर बराबरी का उसे दावा है । कमीना होकर गुलसे बेजार है, वह झाड़ की पत्ती होकर साथ सोनेके नहीं तुलसी है रत्ती होकर !

हामिद—अजी, वोतो किसी को भी नहीं खातिरमें लाती है, जो जाता है उससे इसी तरह पेश आती है !

आतिशखान—हां मालूम भया कि तुमपर भी मुसीबत गुजर चुकी है ?

हामिद—मेरीतो बरसों की बात है मगर हां वो हर एक से योंही पेश आती है, इसका बाइस क्या है ?

आतिशखान—बाइस वाइस, ये कि वो किसी नवाब या शाहेजादे से दिलको लगायेगी, मगर याद रखना कि वह इसका बदला जरूर पावेगी ।

हामिद--बदला ? आतिशखान बदला तो वो लूंगा कि वो भी जिन्दगी भर याद रक्खेगी ।

गाना

बनकर काल फिलहाल लूंगा बदला ।
बख्शूं जिल्लत किनरो तखवत ॥
आबरू इज्जत करदूं पामाल ।
कर कर जाल पलक झपकत आफत ढाऊं ॥
आनकी आनमें आग लाऊं ।
निडर बनकर धूम मचाऊं ॥
करदूं खस्ता हाल........बनकर काल..........

लड़के--हुर्रे हुर्रे च[illegible] हटो रास्ता छोड़, हमारे सरकार नव्वाब बांकेखान तशरीफ लाते हैं ।

गाना

है जीत हमारी मौला ।
सज धजमें हैं बांके मियां ।
शोहरे हैं इनके ठाठके बल्ला बड़ा ।
इनको मिला जानिबसे मुल्की लाटके ।
बुनुं चटाईके तने हैं शामियाने ठाटके ।
मोहताज टूटी खाटके नव्वाब हैं अरकाट के ।

सब लड़के--हुर्रे, हुर्रे ।

लड़का--२--[illegible]गी सिपह सालार का ये लश्कर अगर है दिलसे यह लड़ने के लिये तैयार है ।

सब—हुर्रे हुर्रे ।

लड़का—१—तीर ये कमान ये पिस्तौल ये तलवार है पर क्या करें कि हमारा सरदार मुफलिस बेकार है ।

सब—हुर्रे, हुर्रे ।

लड़का—२—घोड़ा भाई गधा टांगे की है सवारी फाकों धूल पीछे पीछे चलती है यह फौज उनकी सारी। फाकोंसे घरमें अम्मां करती है बेकरारी । नव्वाब जिनके बेटे कहलाते हैं शिकारी । पल्ले नहीं है पैसा लेकिन भरम है भारी ।

सब—हुर्रे, हुर्रे ।

बांकेखान—ऐ नाजो नियाज के मंदर की देवी माहरू देखती सही कि मैं तेरे इश्क में कैसा बेकलो दिवाना होरहा हूं ये लड़कों का शुकर और ये नब्बाबी फकत इस दिले बेताब के बहलाने का मशाला है । जाव जाव यारो मुझे तनहाई की जरूरत है ।

सब लड़के—नव्वाब बांकेखान को हमारा सलाम और तस्लीम और बंदगी ।

बांकेखान—आज मैंने अपने जोशे मोहब्बत में आकर प्यारी माहरू को एक खत लिखा है, जोकि मैंने अपने कासिद के हाथ भेजा है और उसने इसी वक्त मुजसे यहां पर मिल ने का वायदा किया है । प्यारी माहरूसे मेरी किस्मत का लिखा हुआ जवाब आता होगा ।

आतिशखान—ये कौनहै लड़का सौदाई ।

हामिद—ये एक बागवान का लड़का है बेवकूफ मगर खुद को समझता है बड़ा लायक और फैलसूफ, शेख चिल्ली की तरह मनसूबे कराता है, खुदको नव्वाब कहलाता है ।

आतिशखान—आखिर इसका सबब ?

हामिद—इस मगरूर सोमतन का सबब जिसके कौन पर आप हैं तयार उस लड़की का यह है आशिके जार।

आतशखान—क्या माहेरू का आशिक है ?

हामिद—जी हां माहेरू का आशिक है !

आतिशखान—ओहो इस फितर्ता के अब बदले की सूरत कौन सी है, हामिदखान हम और तुम इस मगरूर के हाथों से बहोत जिल्लत उठा चुके हैं। अब हम तुम मिलकर इसको नव्वाब बनाये और उस मगरूरसे शादी करायें। इसी तरह हम अपनी बेइज्जती और शरमिन्दगी का बदला पायें।

हामिद—अरर यह तो बहोतही सख्त बदला है।

आतिशखान—तो क्या हमारी हिकारत और शरमिन्द भी इससे कम है।

कासिद—बंदगी अरज है जनाब बंदा नेवाज।

बांकेखान—आव आव मेरे प्यारे दोस्त, मैं तुम्हारा ही इन्तेजार कर रहा था।

लाया है खतेयार मैं क्यों कर न बुलालूं।
कासिद के कदम चूमकर आंखोंसे लगालूं॥

अब मैं यह पूछता हूं कि तुमारी क्या खातिरो मदारत करूं।

कासिद—बस जनाब रहने दीजिये, खिदमत न कीजिये, बहोत मेरी खिदमत हुई कि मुझे जिन्दगी भर याद रहेगी।

बांकेखान—क्या तेरी वाकई ऐसी खितमत हुई है, हां ये तो मैं पहलेही जानता था कि मेरा नाम सुनकर मेरे कासिद की खिदमत और मदारत करेगी और उसको कुछ इनाम भी देगी।

कासिद—हां हां जनाब मुझे ऐसाही इनाम मिला है कि मरा ही जी जानता है।

बांकेखान—अहाहा, अहो हो आजतो मैं अपने जामेमें फूला नहीं समाता हूं !

कासिद—इस बिचारेके सिरपर तो खुशी की गरमी चढ़ गई है, मगर जब इसका जवाब पायेगा तो बरफ की तरह ठंडा हो जो जायेगा।

बांके०—तो क्या उसने अपने हाथसे खत का जवाब लिखा है ?

कासिद—अजी जनाब क्या आप समझते हैं कि उसने खतका जवाब लिखा है ?

बांके०—तो उसका कुछ जुबानी हाल तो सुनाओ।

कासिद—अच्छा तो लो तैयार हो और गिने जाव।

(मारता है)

बांकेखान—हैं, हैं, यह क्या दिल्लगी करता है।

कासिद—नहीं नहीं दिल्लगी नहीं ये तुम्हारी माशूका दिलनेवाज का पयाम देता हूं लो और भी लो।

बांके—हां हां अब मैं समझा शायद उसने मुझे मोहब्बत से मारने कहा है, क्या है न यही बात।

कासिद—हां हां यही बात लो लो ये थप्पड है, मुक्का है, यह लात है।

बांके—अरे बस बस ये क्या राजोनियाज है, माहरू भी बड़ी दिल्लगीबाज है, लाव लाव खतका जवाब लाओ जियादा न तरसाओ ?

कासिद—लो जनाब।

बांके—अरे हैं ये तो मेराही खत है अरे ये कैसी नाफरमानी ?

कासिद—जी, पयामे जुबानी और ये खत शादमानी है, ये थोड़ी कदर दानी है।

बांके०—बस बस खत का जवाब लाव जियादः न तरसाव ।

कासिद०—अजी जाव, जाव, ठंडी ठंडी हवा खाव, खोदाका शुक्र बजालाव, अगर तुम वहां जाते तो सरपर एक बाल भी सलामत लेकर न आते ।

बांके०—हैं तो क्या उसने कोई जवाब नहीं दिया ?

कासिद—अजी जवाब क्या उसने तो मुझसे कलाम भी नहीं किया !

बांके०—अच्छा फिर क्या ?

कासिद—फिर क्या उसने तुम्हारा खत फाड़कर फेंक दिया और पैरोंसे मलदिया !

बांके०—उफ जिल्लत शरमिन्दगी अच्छा फिर क्या ?

कासिद—फिर तुम्हें कमीना पागल उल्लूका पट्ठा वगैरः वगैरः बनाया ?

बांके०—उफ जिल्लत शरमिन्दगी ?

जिल्लत जो मुझको बखशी है अपने मकान पर ।
पहोंचा है माहरूका दमाग आसमान पर ॥

कासिद—अजी आपने तो फकत मूंसे ही जिल्लत शरमिन्दगी उठाई मगर मैंने तो तुम्हारी खातिर मुफत में लात जूती खाई ।

बांके०—अच्छा भाई क्या खूब अच्छी तरह पिट गया ।

कासिद—अभी कुछ कसर है तो आप पिटो मैं अच्छी तरह पीटा गया ।

बांके०—अच्छा भाई जाव तूंने मेरी खातिर बहोत तकलीफ उठाई है । अब जाव मुझे तनहाई की जरूरत है ।

कासिद—हां जनाब मेरी भी यही मरजी है, क्यों कि मेरे तमाम बदन का मारे दरद के भुरता होगया और दिलसे सीखना चाहिये

और मिले हुये ईनाम को हजम करना चाहिये अच्छा तो जनाब मैं जाता हूं ?

बांके०—अच्छा जाव !

कासिद—अच्छा तो कुछ ईनाम ?

बांके०—जा ओ बदगुमान, उफ् जिल्लत, सरमिन्दगी ओ खुद पसंद औरत मुझको फकीर, नाचीज जाना, तो मैंने भी दिलमें ठाना, कि तुझको इस खुद पसंदी का मजा चखाऊं और इस तेरे गरूर के ताज को अपने पाओं के तले न मलडालूं तो अपना नाम बांकेखान बदल डालूं ।

आतिश०—सब्र सब्र ऐ दोस्त अपने गुस्से को थाम और अपने पेशके घोड़े को सब्रकी लगाम दे ?

बांके०—तुम कौन ?

आतिश०—हम इनसानके आड़े वक्तमें काम आने वाले ?

हामिद—गरीबों को मुसीबत से छुड़ाने वाले ।

बांके०—याने ।

हामिद—याने हर एक की मुराद बर लाने वाले ।

बांके—तुम यहां किस लिये आये हो ।

आतिश०—हम यहां इस लिये आये हैं कि तुमको मुसीबतसे बचायें और जो कुछ तुमने इरादा किया है उसको अजमत तक पहुंचायें !

बांके०—या अल्लाह कोई धोखेबाज तो नहीं है क्यों जनाब मेरे दिल का मन्शा क्या है और उसे आपने क्यों कर जाना ?

आतिश०—उस माहरूसे दिल लगाना और आपका उसके पास कासिदके हाथ अपनी शादी का पयाम भेजना और कासिद का

वहां जिल्लत पाकर वापिस आना और आपका मुद्दतों तक जंगल की खाक उड़ाना ये हमने खूब जाना !

बांके—ऐ मेरे हामी वो मददगार तुम मेरे वास्ते बस रहमत के फरिश्ते बनकर आये हो भला अब मैं ये पूछता हूं कि आप मेरी क्या तदबीर करेंगे ?

आतिश०—अजी तदबीर कैसी हम तो आपको माहरू से मिलायेंगे !

बांके—मगर आप मेरी शादी का क्या इन्तेजाम करेंगे ।

आतिश०—अजी ऐसी तरकीब करेंगे कि माहरू तुम्हारी दिलदादा हो जाय बलके तुमसे शादी करने को आमादा हो जाय !

बांके—ऐ यार उस ताजदारे हुस्न को अगर मेरी चाहत हो जाय तो मुझे हासिल तमाम दुनियां की बादशाहत हो जाय ।

आतिश०—शादी कर देना तो हमारा काम है । मगर उस पर अमल करना तुम्हारा काम है । क्योंकि इसमें हमारा सैकड़ों रुपये का नुकसान होगा । फिर कहीं ऐसा न हो कि हमारी मुफ्त की रकम जाये ।

बांके०—मैं अपनी इज्जत और ईमान की कसम खाता हूं कि जो कुछ आप कहेंगे मैं उसी पर अमल करूंगा ।

आतिश—ये हवसे फितरत अब बदलने की सूरत कौनसी है । देख अब कौड़ी के गिनने वाला कौड़ी का तीन तीन बनाता है । अब महलके बदले में उजाड़ झोपड़े में जिन्दगी बसर करना ।

चल चुका वार तेरा जाये जिगर बाकी है ।
अब जिगर थामके बैठो मेरी बारी आई ॥

बांके०—तु ऐ बादे सबा मुझको उड़ाकर यार तक लेजा ।

दुवारा उस रुखे जेबाकी फिर मुजको झलक दिखला॥
हुवाहूं नीम बिसमिल मैं निगाहे मस्त की जिसकी ।
उसी दिलदारके चेहरेकी फिर मुजको झलक दिखला॥
नहीं गरहो सके इतना तो फिर सूबे अदम दिखला।

गाना ।

अकड़ अकड़ कदम उठाओ ।
मनमें कोई खौफ न लाओ ॥
भजो दिलसे हरनाम ।
चलो मिलकर फन्दा डालें हम ।
कीना सीने से निकालें हम ॥
बुलबुलको करूं समै करम ले हम अब देर नहीं करना ।
हां सचहै यारों बम खुवारों वरना होगा मरना ॥
घोड़े तुझको चढ़ाते हैं अहा हाहा हा ।
लालों से तुजको सजाते हैं अहा हाहाहा ॥
नबाबी ठाठ बनाते हैं अहा हाहा ।
मन धीरज घना मूंछूं पर देदे के ताव ॥

अङ्क पहिला—पर्दा चौथा ।

महल अगला ।

गाना ।

सँवरियासे जियरा लगाय मैं तो हारी रे ।

लगाय मैं तो हारी, लगाय मैं तो हारी ॥
बेकरारीसे दम लेना है दुशवार मुझे ।
चैन देती नहीं अब हसरते दीदार मुझे ॥
लागी लाग्मी कटरिया, संवरियासे जियरा ।
लगाय मैं तो हारी मैं तो हारी रे ॥

दिलरुबा—ऐ गुल चहर तुमने कुछ सुना ?

गुलचहर—तो क्या वो मेरा प्यारा हामिद आगया ?

दिलरूबा—नहीं, ये वो बात है, याने वो सफदर खांन आमे वोला है न! उस्से और दौलत बी से शादी होने वाली है।

गुलचहर—मुझे इन वातोंसे क्या गरज, तुझे तो है तमाम शादी और गमी का मरज ।

दिलरूबा—और नहीं आंखे लड़ाने का और दिल लगाने का है मरज।

गुलचहर—क्यों, ओ शरारत की पुतली तू न छोड़ेगी निशाना चलाना ।

दिलरूवा—आखर है न उठता जमाना ये तो तुम्हीं को मुबारक हो आग लगाना।

शमये हुस्न चमकाना तुम्हारा ।
बना है कोई परवाना तुम्हारा ॥

गुलचहर—दिलरूबा अबतो बहोत इतराई अबतो शमः बनाके जलाया मगर परवाना किसको बनाया ।

दिलरुबा—हैं, तो क्या मैं हूं कोई पराई । शमः मेरी बहेन और परवाना मेरा भाई ।

गुलचहर— चल दूरहो जैसी तू वैसा तेरा भाई, एक बे दरद, दूसरा कसाई।

दिलरुबा— अच्छी सुनाई भला मेरे भाई हामिद ने कौन सी की है बुराई।

गुलचहर—सरासर बेवफाई, शादी का वायदा करके फिर सूरत न दिखाई।

दिलरुबा— तो बहेन इसमें उसकी क्या खता है, ये ज़ुल्म तो तुम्हारे वालिद शेरखान ने किया है, कि तुम्हारी वालदः के गुजरनेके बाद इस चंचल को घरमें लारक्खा है, और उसकी बेटी दौलत को अपनी बेटी बनाकर तुम्हें दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिया है।

गुलचहर— फिरे तकदीर तो फिर क्या हो तदबीर।

गाना।

बे ठौर ठिकाने हैं न हम घरके न दरके।
हैं सायये दिवार इधरके न उधरके॥
रंज उठाना गम खाना छोड़दे खियाल।
आन मिलेगा वो प्यारा वो जानी॥
वारा है जिससे सारा तू है जिगरो जान।
गमें यारमें मेरा सीना फिगार है।
दिलदार के फिराकमें जीना बेकार है

(मुआ और मुफलिस का आना)

मुआ—जनाब आप यहां तशरीफ रक्खें मैं आप[illegible] को इत्तला कर आउं मगर जनाब आपका नाम क्या [illegible]

मुफलिस—बस तू इतनाही कहदे कि हम तशरीफ लाये हैं ?

मुन्ना--अच्छा जनाब मैं यही कहदूं के हम तशरीफ लाये मगर जनाब वो तशरीफ कहां है जिसे आप लाये हैं ?

मुफलिस—अबे अजब तकरीरिया है तू।

मुन्ना--येभी कोई अजब किसम का है।

मुफलिस--मैंने मालूम करली है सारी कैफियत, इस घर में वे दोनों की हुकूमत और वोही सामनेसे आती है, मगर उसकी सूरत तो कहीं देखी हुई सी नजर आती है अरे येतो वोही रमजू डाकू की बीबी चंचल है। जो एक मरतबे रमजू को छोड़कर भाग आई है और अब यहां आकर कदम जमाया है, अच्छा देखा जायगा।

चंचल—क्यों बे मुन्ने वो बदमाश आदमी कहां है।

मुन्ना—वो देखिये यहां है।

मुफलिस—अच्छा बदमाश आदमी सब देख लूंगा।

मुन्ना—सब देख लूंगा।

(चंचल पास जाकर)

चंचल—आप कौन हैं? कहांसे आये हैं? और मुझसे क्या काम है ?

मुलफिस—अजी आपके बड़े फायदे का काम है !

चंचल—मेरे फायदे का काम वो क्यों कर ?

मुफलिस--आपके दामाद सफदर खान आते हैं और उसके साथ इस दुकान के मालिकशेरखान भी तशरीफ लाते हैं !

चंचल-ओहो खुश खबर खुश खबर क्या शेरखा आगये

मुफलिस—जी हां !

चंचल—अरे ओ शुबराती ओ वफाती ओ बकरीदी खैराती।

मुफलिस—उहूं, पूरी बात तो सुनो ?

चंचल—हां कहो कहो ?

मुफलिस—अजी वो सफदर खान भेस बदल कर आते हैं अपने साथ अपने नौकर चाकर को भी लाते हैं ?

चंचल—सफदर खान भेसबदलकर आते हैं यह किस लिये ?

मुफलिस—वो इस लिये कि उनको हर तरह मंजूर है अपनी बीबी का इम्तेहान अगर तुम्हारी लड़की में जरा नुक्स नजर आयेगा तो मलिक की जगह नौकर ही इससे निकाह पढ़ायेगा

चंचल—हां ये बात है जब मैं उनके सामने बिलकुल अंजान बनी रहूंगी बलके कुछ न कहूंगी !

मुफलिस—बस तुम अपना पाट करना वो तुम्हारा पाट करेंगे तुम उनकी फजीतीका ठाट करना तो तुम्हारी फजीती का ठाट करेंगे ।

चंचल—अरे मैं तो वो फजीती करूंगी कि अपने मुये चक्कर की नाक का टुकड़ा उसके हाथ में दूंगी ।

मुफलिस—अररर नाक मत काटना डाक्टर लोग फिर जोड़ देते हैं बस तुम सिर्फ उनकी फजीती करना ।

चंचल—अजी देखो तो सही मुझे खूब आता है उनको गाफिल करना ।

मुफलिस—बस मैंनेभी गोलाबारूद सब कुछ तैयार कर रक्खा है अब देखना थोड़ी देरमें कैसा धड़ाका दिलका उड़ाता है ।

दौलत--देखो अम्मा जान अबमैं कैसी हसीन नजर आती शीशेमें अपनी सूरत देखकर खुद फूली जाती हूं ?

चंचल--हां बेटी मैं तेरे जैसी होशियार भी किसी को नहीं पाती हूं !

मुफलिस--अरर एतो बड़ी लड़ाकी औरत नजर आतीहै मगर ये गुलचहर कहांसे बनगई, एतो वही रमजू डाकू की बेटी दौलत है खैर सब देखा जायगा मगर हां जनाब इस समय मेरा मतलब कुछ निराला है ?

चंचल--क्या और भी कोई गड़बड़ घोटाला है ?

मुफलिस--जी हां !

शेरखान--लो बी चंचल ये आपहोंचे आपके दामाद (सफदर से) और येही हैं आप की सास नेक निहाद।

चंचल--अरे नौज चूल्हे में जाये ये मुआ नाशाद एक टके का नौकर होगा मेरा दामाद।

शेरखान--अच्छी तरह करो इनकी मेहमानी और कदर-दानी।

चंचल--मैंतो खूब करूंगी इनकी मेहमानी और कदर दानी।

सफदरखान--आदाब अरज है हुजूर ये कौन है हूर मेहार !

शेरखान--ये वोही है गुलचहर नेक निहाद जिससे होगा आपका घर आबाद !

चंचल--ये मुआ मेरे लिये बनकर आया है सैयाद मगर मैं भी हूं इसकी उस्ताद आप जरा इधर तो आइये मैंने मुफलिस की जुबानी ये सुना है कि सफदर तो चक्कर के भेसमें आता है और चक्कर सफदर के भेसमें आता है।

शेरखान—हां ये बात है, इस पर मुझे जंगल में भी शव गुजरा था, कमबखत मेरा पाकेट मय लाकेट के दबाके बैठ रहा।

चंचल—ये मुआ सफदर के भेजमें चक्कर बदजात है।

दौलत—अहा ये जवान तो बड़ा रंगीला, सजीला, नजर आता है, मुजको ये घोड़ा, गाड़ी, और चोली, साड़ी, दिया करेगा।

गाना।

दिल पियाने छीना आंख मारके।
हजारों में होगया ए रगीला। दिल० ॥
ऐसेको चाहू कैसे न व्याहूं बांकी अदा है नया जोबना।
मेरे नैनों मे है बसा प्यारा दिलदार ॥
जिया पिया निसार, करूं ऐसे को प्यार।
तनमन तोपे वारू। पियाने छीना० ॥

चंचल—देखिये क्या मेरी बेटी को घूर रहा है, जैसे मुखा भूखा बंगाली भात पर नजर लड़ाता है।

शेरखान—क्यों जनाब हमने सुना है आपके यहां नौकर भी बजाये मालिक के होते हैं ?

सफदर खान—अरर फिर इसको पागल पनेका जोर हुवा !

शेरखान—और हमने वे भी सुना है कि आपके यहां नौकर मालिक के मंगीतर से शादी करने में कामियावहै !

सफदर—क्या ? मालिक के मंगीतरसे शादी करने में नौकर कामियाब है !

शेरखान—और येभी सुना है कि मालिक अपने नौकर को अपनी जोरू तक दे देते हैं।

सफदर--ये आप क्या कहते हैं !

चंचल--बस बस, इस नाटक का पर्दा न उठाव, अब इसका तमाशा देखते जाव ।

शेरखान--सफदरसे अच्छा तुम जाव और दीवानखानेसे दो कुर्सियां उठा लाव ?

सफदर--हैं, नौकरका काम मैं करूं, हाय हाय ससुरा है नहीं तो सारा पागल पना निकाल देता, हैं!कुर्सियों का काम मैं करूं अरे मेरा नौकर चक्कर कहां है ।

शेरखान--तुम्हारा नौकर चक्कर अभी आता होगा, पहले, तुम कुर्सियां तो उठा लाव ।

सफदर खान--अरे भाई ससुर का कहना मानना चाहिये जोरूके बापका हक पहचानना चाहिये ।

चंचल--देखा, आखर है न वोही नौकर कमीना, कहीं, छिपता है नौकर का करीना ।

शेरखान--हां ठीक है, ठीक है ।

नौकर--हुजुर सफदरखान का नौकर आता है और अपना नाम चक्कर बताता है ।

शेरखान--अच्छा जाव और उसको बड़ी ताजीम व तकरीमसे लेआव । (आना चक्कर का)

चंचल--देखिये यही हैं वो हमारे आलीशान दामाद ।

चक्कर--यहां जितने हैं हाली मुकाम, उनको वंदगी करता है ये गुलाम ।

शेरखान--आइये, आइये, कदम रंजा फरमाइये ।

गाना चंचलका ।

अजी आवोजी मेरे जवाई प्यारे आवोजी ।

प्यारोंके प्यारे मिलकरके मिले हाथ ॥
मिन्नत मनाती थी बनुं मैं उसकी सास ।
बेटीके शौहर की क्यों न बलाये ले, पयरूं तक आवो आवोजी
हमतो तुम्हारी इन्तेजारी में हो गये हैं बेकरार ।

चक्कर---जी हां हाजिर हुवा ये आपका ताबेदार मगर कहां तशरीफ रखते हैं हमारे सरदार सरकार ?

शेरखान---देखिये येभी नौकर की पूरी नकल अदा करते हैं।

चंचल---अब देखिये आगे क्या करते हैं, यहां भी आपके लिये नौकर चाकर मौजूद हैं अरी ओ चंपा, गुलाबी बकरीद खुबराती रानी रमजानी ।

सब नौकर रानी---क्या है, पठानी क्या है ?

चंचल---इधर आव हमारे दामादकी खूब चम्पी बनाओ

मुन्ना---बहोत अच्छा, हम उन्की येसी खिदमत करेंगे कि घोड़े की तरह थकन उतारे देते हैं ।

चक्कर---अरे तुम लोग क्या करती हो ?

नौकर---वोही, आप ठहरो तो सही, हम लोग आपकी तमाम थकन उतारे देती हैं ।

दौलत---अरे क्या, ये लोग पागल हो गई हैं, हैं, ये क्या सवांग, क्या ये लोग पीगई हैं भांग ।

गाना ।

अजी चंपी बनायें नौशाकी---
थकन मिटायें करें खिदमत सौ जानसे ।
जायें दुल्हा पै वारी सौ जानसे ।

गरम गरम चंपी बनाये नरम नरम चंपी बनायें।

चक्कर—जाव बे ओ उल्लू मोहेकोन कोसो
चंपी चुल्हेमें भोको।
नौशाकी थकन........

सफदर खान---अरे हैं ये क्या हो रहा है, कौन चक्कर ?

चक्कर---अजी हां, ये मेरे मां और बाप मुझे बचाव।

शेरखान----अजी जनाब, आप तकलीफ न फरमाइये, इधर आइये और कुरसी पर बैठ जाइये।

चक्कर---अजी भला मेरी क्या मजाल।

शेरखान –अजी ये खूब जानते हैं तुम्हारा हाल, अरे तुम सब जाओ और इसके वास्ते अच्छे अच्छे खाने लाव।

दौलत—अय क्या मैं नौकर हूं जो जाऊंगी।

चक्कर—अजी तुम क्यों तकलीफ फरमाओ, मैं नौकर हूं जो काम हो मुझसे करवाओ।

चंचल---अजी ये हम खूब जानते हैं कि आप नौकर हैं, बल्के खिदमत गार हैं भला ये कौन कहता है कि आप हमारे दामाद जी विकार हैं।

चक्कर---आपका दामाद सफदर और मैं हूं उसका नौकर चक्कर।

शेरखान—अजी येतो हम खूब जानते हैं, तुम्हारा चक्कर, और मक्कर, हमारे नजदीक है चक्कर सफदर, और सफदर है चक्कर, आपके घर पर तो बहोत खैरियतसे है। अजीजो-आका नौकर चाकर सब अच्छे हैं ?

चंचल---अरी दीवानी छोकरी, ऐसे नखरे न कर जा जल्दी ले आ।

चक्कर--(अलग जाकर) अजब मक्कर, यहां अजब उल्टा मामला है । मुझे चक्करसे घनचक्कर बना दिया, मगर मेरा क्या जाता है (जाहिर में)हां फजलसे खोदासे बहोत अच्छे हैं

चंचल--खाना लाकर लीजिये नोश फरमाइये सासके सामने हरगिज न शरमाइये ।

चक्कर--(अलग जाकर) हां हां अब मुझे मालुम हुवा, कि ये बुढ्ढातो यहां का बावरची और ये यहां की बावरचानी रश्के शमशाद,बनाया चाहते हैं, मुझको अपना दामाद, चलो बच्चा मक्कर अब खुले तुम्हारे नसीबोंके चक्कर, अब जो कुछ मिले उड़ाओ जो कुछ होगा देखा जायगा । अलहम दो लिल्लाह जी,मारे भूखके बेकरार हो रहा था, मगर यहां आते ही लजीज खाने मिले बिसमिल्लाह । (खाने लगना)

दौलत--मुवा कैसा कंगाल है कि सेर सेर भर का निवाला मूं में ठूसे जा रहा है ।

चक्कर--अजी जनाव, येभी मुझको भूखी नजर आती है अजी आव, तुम भी खाव, दूरहीसे न नजर लगाव ।

दौलत--(मुंह मोड़कर) मुवा कैसा बेहया है ।

चंचल--अरी क्यों नहीं आती है,हां लड़की जरा शरमाती है,चलरे दीवानी छोकड़ी अब जियादा नखरे नकर,इनके साथ बैठकर दो निवाले तू भी खाले ।

चक्कर--अजी आव, हाथ बढ़ाव, हमसे न शरमाव ।

चंचल--वाह हमारे दामद तो बड़ेही खुश मिजाज हैं, अजी शादी तो हुई नहीं और अभीसे जोरू से मजाक उड़ाने लगे

(दोनों का खाना खाना)

सफदर खान—हैं क्या गुलचहर और चक्कर एक दस्तर
ान पर खड़े हैं । दूसरी ये नकल क्या हो रही है । अरे ओ
बख्त चक्कर ये क्या कर रहा है ।

चक्कर—जी हुजूर, इसमें मेरा क्या कुसूर है, जो कोई जबर-
ती खिलावे तो क्या कोई छोड़ दे, आव आव तुम भी खाव ।

चंचल—नहीं नहीं, तुम यहांसे जाव, और जो कुछ हो
रची खानेमें से खाव, और ये बरतन यहां से उठा लेजाव ।

सफदर—चल बे बेवकूफ, मेरा सामान दुरूस्तकर मैं अभी
ांसे जाता हूं ।

चक्कर—अजी, हुजूर, हुजूर, जरा हठरो भी, अभी आया ।

(चक्कर का सफदर के पीछे भा ा जाना)

चंचलखान—क्या दामाद साहब चले गये, नौकर की तो खूब
जीहती भई, क्या कंबख्तने मालिक का भेश बदला था ।

दौलत—अरे ये कैसी बेदादी, आप मेरी शादी करते हैं या
बादी ।

शेरखान—चुप रहो, तुम क्या जानी हो, साहबजादी ।

दौलत—मेरी जूती भी न करे ऐसी शादी, चुपरहो फसादी,
या मैं ऐसेके नौकरके साथ निकाह पढाऊं, और उम्रभर
ी पीस्ते पीस्ते मर जाऊं, अब मैं जाती हूं, जहर खाकर
को मजा चखाती हूं ।

चंचल—चलो चलो लड़की को गुस्सा आ गया ।

(सबका जाना)

अंक पहिला—परदा पांचवां ।

महल शाही ।

आतिश खान---क्यों हामिद्खान पूरी उतरी हमारी तद्बीर।

हामिद्खान--वल्लाह,ऐसी पूरी,जैसे निशाने पर तीर, इस गरीब बागवान को नव्वाब क्या बनाया, गोया शबनमके कतरेको आफताब बना दिया ।

आतिशखान--जैसे कांचके टुकड़े को, सफाईसे हीरा बना दिया ।

हामिद्खान--अब सारा का सारा घर उसको असली नव्वाब समझकर लट्टू हो रहा है, हरएक खुशामदसे चपरगट्टू हो रहा है ।

आतिशखान--जो हमने बीज कमीनेके बागमें बोया है अब वो बहोत जल्द नशवे नशवे तुमा पाकर तैयार होने वाला है,और उसमें एक निहायत कड़वा फल निकलेगा,जो कि इस मगरूर माहेरू को चखना पड़ेगा ।

हामिद्खान--अरे देखो देखो सामनेसे नव्वाब साहब की सवारी आती है ।

गाना ।

जान जाना के मैं पास जाऊं वहां
जाना जाना जाना जहां आहा
बरस बरस तरस तरस रहा कफस में दिल ।

अय आलिब अब चमन में जाके गुलसे मिल ।
जाना जाना जाना जहां आहा ।

बांकेखान--वाहरे इनकिलाबे जमाना, कलतो मैं कह
ता था एक गुलाम गरीब बागबां,मगर आज बना नव्वाबे
शां, मगर जिस आतिशखान और हामिद्खानने मुझपै
रेब का फंदा डाला है,उसका मतलब मेरी समझ में आया
ने उस बेचारी भोली भाली को धोचा दिखानेके लिये ये
ाल बिछाया है, मुझको धोखे की टट्टी में फांसकर खुद
शकार खेलना चाहते हैं. मगर खैर क्या मुजायका है, अब
ब उससे शादी करके मेरा मकसद दिली बरआयगा तो उस
क्त जो होगा देखा जायगा ।

आतिशखान--बंदगी जनाब बंदगी ।

बांकेखान—बंदगी . बंदगी ।

हामिद्खान--तसलीम, तसलीम ।

बांकेखान--आदाब, आदाब ।

आतिशखान--वाह मियां बांकेखान आज तो तुम्हारी
छ अजीबही है आनो बान ।

हामिद्खान—वल्लाह अगर हम तुम्हारी असीलयत को
जानते तो तुमको बिलकुल न पहचानते ।

आतिशखान—भाई वाकई न पहचानते ।

बांकेखान—तुमतो मुझे नहीं पहचानते,मगर मैं तो आपको
खूब पहचानता हूं ।

आतिशखान—हामिद्खान—भला हम कौन हैं?

बांकेखान—तुम वही हो !

आतिशखान—कौन ?

बांकेखान—एक जहरीला नाग !

हामिद्खान—और दूसरा ?

बांकेखान—और दूसरा किसीके खानये दिलके जलाने के लिये आग !

आतिशखान—भाई और सुनो हमारीही बिल्ली और हमीसे म्यांव, भला ये तो बतलाइये कि आपको नब्बाव किसने बनाया।

बांकेखान—हां, हां, नब्बाव तो तुम्हींने बनाया, मगर किसने एक बेचारी, भोली, भाली, लड़की को, नीचा दिखाने को ये जाल बिछाया है ?

आतिशखान—तो क्या हमारी हेकारत और शरमिन्दगी इससे कुछ कम है ?

गाना

नाग हूं मैं जहरी काला,
डसकर बसकर लूं मैं जान।
खुदसर मुजपर पत्थर फेंके,
किसकल बलपर आन।
दुशमन बनकर लूं मैं बदला,
मुझसे जो बदले।
हूं वो अजगर मेरा काटा पानी न मांगे।
बिच्छू वनकर लूं मैं कीना,
करदूं मुश्किल उस्का जीना,
आग लगादूं जानजलादूं,

वे यही हो सीना—नाम हूं० ॥

बांकेखान—खामोश, खामोश, जनाब, जिसके वास्ते तुमने फरेवका जाल बिछायाहै वोही शिकार सामनेसे आता है। तुम अपने अपने काम पर मुस्तैद हो जाव।

माहेरू—आहा क्या बांकाजवान है!

बांकेखान—अहा, कैसी दिलवरों की जान है!

माहेरू—बंदगी जनावे वाला बंदगी?

बांकेखान—बंदगी बंदगी ओ नौ निहाले जहां तुम जैसा गुलेराना जहां रहता हो वो गुलजार तो वहेशतेवरीसे बढ़कर होगा, कहां भलाये हमसरी. फूल करे तुम्हारी बराबरी।

न इस खालकी किसी फूल में है सफाई।
न इस आंखों की किसी नरगिस में है बिनाई॥
न इस गेसूकी किसी बरगे गुलमें है सफाई।

सहेली—१—भला ऐसे नव्वाब हशमत आब का मकान, फिरदोसे वरीसे कम होगा।

सहेली—२—नकशो निगार, बागे इरम होगा।

आतिशखान—बागे इरम क्या बागे जहन्नम होगा।

हामिदखान—जब सुनेगी तो फना इसका दम होगा।

बांकेखान—तुमने तो मुझसे भी जियादा तारीफ कर-डाली, कि इस गरीब की झोपड़ी को समझ लिया महले आली।

सहेली—१—लो बहेन येतो गजब हैं जादू बयान।

बांकेखान—तो क्या तुम कुछ कम हो शीरीं जुबान।

सहेली--२--लो बहेन उन्होंने तो तुम्हारी भी तारीफ करडाली।

बांकेखान--तुम क्यों रहगई खाली, तुम भी तो हो आन बान वाली।

सहेली--क्यों जी बंदी पर भी नजर डाली, तुम्हें हुस्न के सिवा कुछ और भी भाता है?

बांकेखान--जो शय दीदः औ दिल को भाती है, उसी की तारीफ जुबां पर आती है!

सहेली--जनाब अपने मशकुये मोअल्ला का हाल तो सुनाइये

आतिशखान--हुजूर का मशकुये मोअल्ला कुछ घांस कुछ फूस कुछ मकवा बाकी अल्लाह अल्लाह और खैर सल्लाह।

माहरू--हां जनाब कुछ अपने मशकुये मोअल्ला का तो हाल सुनाइये?

बांकेखान--मैं अपने मशकुये मोअल्लाह का आप क्या जिकर करूं इन मेरे आदमियों से पूछ लीजिये!

आतिशखान--हां, हां, हजूरकी कसरे आली, क्या कहेना चश्मबद्दूर वादये तूर।

हामिद खान--उछलतेही लंगूर।

आतिश खान--वो कोसोंतक मुरगो झार।

हामिदखान--वो घास फूसका अंबार।

आतिशखान--वो चश्मये आवेसार।

हामिदखान--वो गधों के लोटने की वहार।

आतिशखान--वो तोपों की शोरो पुकार।

हामिदखान--वो कुत्ते बिल्लियों की शोरो पुकार।

आतिशखान--वो जरो जवाहिर निगार हाथी, ऊंठ घोड़ा पील वगैरह।

बांकेखान---वगैरह वगैरह बस कहां तक तारीफ करते जावगे।

आतिशखान---गर हमारे शहर का रियासत का पूरा पूरा बयान हो, तो अभी हो जाये उल्फते लैलाये दास्तां।

हामिदखान---घरमें भूकी हंडिया और बाहर कुत्ता दरमां।

माहरू---अच्छा दिल चाहता है कि इसको एक नजर देखलूं।

आतिशखान---ठहरजा, थोड़ेही अरसे में देखेगी।

हामिद०---और वहां अपनी किसमत को पत्थरसे फोड़ेगी।

सहेली---लो बहन शाने रियासत भी अजबतर है। मोतियों का हार गले में क्या आबदार है।

माहरू---माशा अल्लाह, हारकी गलेसे बहार है, और गले की हार से बहार है।

बांकेखान---अगरचे पसंद खातरे दिलदार है, तो आप पर से सदके है, निसार है।

आतिशखान---हैं, हैं, ये हार किसका किसको देता है, क्या अपने बापका समझकर देता है।

हामिद०---अजी बापका नहीं, आपका समझ कर देता है।

आतिशखान---हैं हैं, मेरी दादी का दिया हुवा हार।

हामिदखान---अरे जानेदे यार गोली भी मार।

बांकेखान---और लीजिये यह दूसरी निशानी अंगूठी।

हामिदखान---अरे हैं हैं अगूठी किसको देता है, क्या दादी जी साहब फातेहा सलावती की दूकान है।

आतिशखान---ठहरिये ठहरिये आप क्यों घबराते हैं।

हामिदखान---अजी हजूर, हजूर।

बांकेखान---क्या है दूरसे बातकर।

हामिदखान---हजूर, हजूर जरा इधर तशरीफ लाइये।

बांकेखान---क्या है?

हामिद्खान--क्यों बे किसके माल पै करता है फैयाजी !

बांकेखान--अबे तू पूछने वाला कौन कोतवाल है या काजी।

हामिद्खान--मगर तुमको इतनी फैयाजी करने का हुकुम किसने दिया है ?

बांकेखान--हमने अपने हुकुमसे किया अगर हम येसी फैयाजी न करेंगे तो हमको नव्वाब कौन कहेगा !

हामिद०--अरे मेरी अंगूठीमें लाख रुपये का अलमास है?

बांकेखान--तो बस अब तो तुम्हारा भी सत्यानाश है !

आतिशखान--और मेरा दस हजार का हार भी देडाला ?

बांकेखान--तो क्या तुम्हारा भी निकल गया दिवाला !

आतिशखान--अच्छा अच्छा देखलूंगा ?

बांकेखान---भाई चुप चुप नहीं तो सारा भंडा फोड़ दूंगा। बनी बनाई भट्ठी बिगाड़ दूंगा।

आतिशखान, हामिद्खान--हैं, हैं, अरे बाबा ये सब तेरा और तेरे बाप दादे का माल है।

हामिदखान--लो भाई कोई येसी तदबीर करो कि इन दोनों का आजही निकाह हो जाये।

सहेली---१---लो बहेन अब हम भी रुखसत होतो हैं।

माहरू--अब नव्वाब साहेब को आजमाने का अच्छा मौका है

बांकेखान--अब इसके दिलपर काबू पाने का अच्छा मौका है।

माहरू--क्यों जनाब, आपके यहां रहता है कोई मेरी शकल का मेहमान।

बांकेखान--जीहांबिलकुल आपही की शकल का एक और इसी मंजिल में रहता है, आखोंसे निहां और मकाने दिलमे रहात है !

माहेरू--क्या मेरेही शकल की है ?

बांके०--जी हां, आपही की, बिलकुल शकल है, नाक नकशा, शकलो, शबाहत, रंगो, ढंग, और बात चीत में जरा फरक नहीं।

माहरू--तो क्या आपको उसकी चाहत हैं, अब देखिये दोही बातों में मेरी तकदीर का फैसला है।

बांके०--जी हां, उसको मेरी भी चाहत थी, बलके एक नव्वाब की भी चाहत है ?

माहरू--फिरतो आपभी हैं नव्वाब, वालाशान।

बांकेखान—

भरोसा क्या हो उस पर, हो जिसे नव्वाब की चाहत।
उसे चाहूंगा जिसको हो, ये मुझ बेताब की चाहत॥
नहीं मुशकिल है कुछ अयशो अशरत का मिलना।
यहां सहेल है बादशाहत का मिलना॥
है इस मकान में हुस्नो दौलत का मिलना।
बड़ी मुश्किल है सच्ची मोहब्बत का मिलना॥

माहरू--अगर आपको कोई सच्ची चाहनेवाली मिलजाय।

बांकेखान--हां अगर मुझको कोई सच्ची चाहने वाली मिल जायतो मेरा गुंचये उम्मीदे दिल, खिलजाय।

माहरू--प्यारे नव्वाब मैं तुमको सच्चे दिलसे चाहती हूं।

बांकेखान--कौन तुम, अजी नहीं ! नहीं !

माहरू--जी हां ! जी हां !

बांके०--फरजकरो कि मैं एक गरीब सिपाही, बे हुनर, बा मुफलिस बागवान होऊं तो ?

माहरू—मौका मिला है आज तुम्हें इन्तेहान का ।
सब कुछ कहो पै नाम न लो बागवान का ॥
क्यों कर न तैस आयगा इस पर भला मुझे ।
खत लिखके बागबांने फजीहत किया मुझे ॥

बांकेखान—अफ्खाह इसे कहां है वो पहचान, कि मैं ही हूं वो बांकेखान बागवांन (जाहिर में) तो मानलो कि मैं एक गरीब हूं मगर फेर भी तुम्हारा हबीब हूं ।

माहरू—हां,हां, फिर भी आप बार बार गरीब क्यों बनते हैं, क्या मैं इस अंगूठी और इस हार के सिवा और भी कुछ मांग सक्ती हूं ।

बांकेखान—मगर इसवख्त तुम मांगके भी क्या पाओगी, मेरे पास तो सिवाय इस दिलके और कुछ भी नहीं है ।

माहरू—तो वह दिल मुझे दे दीजिये ।

बांकेखान—वह तो मैं पहले ही दे चुका ।

माहरू— गाना ।

छीन लिया पियाने जीया की निखार,
जाद डाला, भाला मारा, प्यारे उल्फत का
मोरे जिगरवाके पार । वाह वाह रंग रसिया
अलबेले मैं तोपै निसार ।
जानी जाना मुझे जानोरे ए सवरिया
मैं तोपे निसार ।
तुही मेरा जिन्दगी का यार—छीन० ॥

आतिशखान—हुजूर हुजूर, वतन चलने की जल्दी कीजिये तैयारी, ये आपके नाम पर नव्वाब कतलूखान का आया है तार, वो सख्त हैं बीमार, एक घड़ी पलमें हैं मौतके आसार, अब आप होंगे रियासत के मुख्तार।

बांकेखान—अरे कहां की चल चल, कहां की नव्वाबी, कहां की रियासत और नव्वाबी की तकरीर, कम्बख्तोंने चट मंगनी और पट व्याह की निकाली है तद्बीर।

वालदा—क्यों जनाब, आप आजही वतन को तशरीफ ले जायेंगे!

बांकेखान—जी हां, देखिये अभी वालिद का तार आया है!

वालदा—अगर आजही शादी हो जाये?

बांकेखान—जैसी आपकी मरजी।

वालदा—तो आजही शादी रचादेती हूं।

बांकेखान—बिसमिल्लाह।

वालदा—(सहेलियों से) अरी तुम जाव और शादी का सामान बाहम पहुंचाव।

अशरफ—अल्लाह आज खोदाने हमारी पूरी की मुराद, ये आरकटके नव्वाब होंगे हमारे दामाद, जरा दामादसे अरकाटी जुबान में गुफ्तगूं तो करूं, क्यों कि थोड़ी बहोत मैं भी यह जुबान जानता हूं। बन वालोदिक नीचा इन्नादोलम!

बांकेखान—अरे बापरे कमबख्ती, ये ससुरे साहब ने क्या झमेला निकाला. क्या कहा जनाब, क्या है!

असरफ—बनवाली दिक नीचा इन्नादोलम।

बांकेखान—बस बस मालुम हो गया कि फरारका रास्ता बहोत नजदीक है!

अशरफ---जी हां हां नजदीक है मैंने ये पूछा के आपका वतन कितनी दूर है।

बांके०---अल्लाही बचाये, अल्लाही बचाये।

अशरफ---भला इसका जवाब दीजिये, नयाकम बड़ी ताक किसको पताऊ।

बांके०---अरे ससुरे साहबने ये झमेला निकाला क्या क भाई मजबूर हैं।

अशरफ---अजी मजबूरी काहेकी आज ही वतन कोजाइ

बांके०---अब मैं भी जरा अट सट करके ससुरे साह को हांके देता हूं। अनकटी चुलम कुते विल्ले।

हामिद---अरे इस कम्बख्त ने कुत्ते विल्लों का कहां हिसाब निकाला।

अशरफ-हैं हैं, जनाब, ए कहां की जुबान है, मैं न समझा।

बांकेखान---अरे खाक, पत्थर, न तुम समझे न मैं।

अशरफ---हां हां तो शायद यह अरकटी जुबान होगी।

बांकेखान---जी हां, जी हां।

हामिदखान---अर ए क्या गड़बड़ घोटाला करते हैं बातों को उड़ाना चाहिये।

बांकेखान---जी हां हुजूर ये गड़बड़ घोटाला तो हो चु अब जरा उर्दू जबान में गुफ्त गू कीजिये क्यों के मेरा मु जाकिवे मशरीक है, इस लिये दोनों जुबान में जरासा फर्क

असरफ---बस बस बस, मुझे सिर्फ इम्तेहानही मंजूर जो इसका अपने पूरा पूरा जवाब दिया।

बांकेखान---जी हां पूरा पूरा जवाब दिया खोदाने, मैं क

का और आप क्या समझे? अरे साबह मैं तो मारे खौफके बद-हवाश होगया, मगर अगड़म बगड़म करके इम्तेहान पास हो गया।

हामिदखान--अरे क्यों डरता है हिम्मत पकड़।

आतिशखान--हुजूर अब देर क्या है जल्द शादीकी रस्म जारी कीजिये?

अशरफखान--जीहां अब देर क्या है?

आतिशखान--तो बिसमिल्लाह।

अशरफ--या अल्लाह ये जोड़ा जिन्दगी भर कायम रहे।

आतिशखान--या अल्लाह जोड़ा भूखा प्यासा भीख मांगता कायम रहे।

अशरफ--दुनियामें शादी खुर्रम कायम रहे, आमीन, आमीन।

गाना

आई हुई घटा चमन में शादमा, शादी की धूम धाम,
सुबहो शाम है, जश्ने आम है॥
प्यारा मिला, दिलजानी लासानी खुश रहे मुदाम,
दिलका अरमान मिला, आराम जान शाद मान॥
शादी०—
आवोरी आवोरी रंग रलियां मनाओरी।
अल बेलियां, अल बेलियां, रंग रेलिया, मनाओ॥
आया है खुशीका ये समां।
आई हुई घटा०—

आतिशखान—उजाड़ झोपड़ी लड़ाई झगड़ा कायम रहे
आमीन आमीन आमीन

अंक पहिला—पर्दा छठां ।

मुफलिस—सुना ?

रमजू—क्या तुम सच कहते हो !

मुफलिस—वह तुमारी बीबी चंचल है, जिसकी तलाश मै रात दिन तुम हैरान रहते हो ?

रमजू—ओ चंचल बीबी तुने कैसा गजब ढाया, कि मुजको गरीब शमझकर धता बताया और उसको मालदार समझकर उसका घर बसाया ।

मुफलिस—अरे दोस्त, अभी तुमने देखाही क्या है; जिनकी औरतें अमीरोंके महेलमें पुलाव और जरदा खाती हैं, उनके खाविन्द मूछोंपर ताव चढ़ाते हैं ।

रमजू—अरे सामहनेसे योही बुड्ढा आता है, जरा छुपकर इनका तमाशा तो देखना चाहिये ।

शेरखान—प्यारी चंचल अब तुम पहिलेसे ज्यादे हसीन नजर आती हो ?

चंचल—वाह, क्या मेरे हुस्न पर नजर लगाते हो ?

शेरखान—अरी वाह मेरी प्यारी !

चंचल—मैंने एक ऐसा पाउडर मंगाया है कि जिस वख्त उसे मैं मुंह पर लगाऊंगी तो इससे भी जियादा खूब सूरत नजर आऊंगी ?

शेरखान—जी हां !

मुफलिस---म्याऊं ।

चंचल---हैं ये बिल्ला कहां बोला ।

शेरखान---होगा कहीं इधर उधर, मगर प्यारी वो तेरा पहिला खाविन्द मुझे और तुम्हें इस तरह देख पाये तो मारे खुशीके नाचने लगजावे ?

रमजू---नाचने लगजाय—अरे बुड्ढे भूत मैं तो सब देख रहा तेरी करतूत ।

शेरखान—प्यारी चंचल अबतो मुझको तीन आदमियोंके नामके बोसे दे ?

चंचल---तीन आदमियोंके नाम बोसे, वो कैसे ?

शेरखान—देख ये पहेला तेरे और दूसरा मेरे नामका ।

रमजू—और अपने बाप के नामका भी तो ले ।

शेरखान---और ये तेरे पहिले खाविन्द रमजूके नामका ।

रमजू—म्याऊं ।

चंचल---हैं ये बिल्ला फिर बोला । चलो चलो प्यारे मुझे यहां कुछ शक मालूम होता है ।

शेरखान---ये कमबख्त बिल्ला कहां छिपा है, मैं अभी जाकर उसे मार देता हूं ।

मुफलिस---देखा दोनोंका कैसा जोड़ा है, एक विलायती और दूसरा तुरकी घोड़ा है ।

दिलेरखान---क्या कंबख्त है, जो मेरे बाप को तुरकी घोड़ा बनाता है—अबे तू कैसे आया ?

मुफलिस---मुझे तो ये रमजू लाया !

रमजू—क्यों बे, तूही न मुझे यहां लाया ?

दिलेरखान---और तू यहां कैसे आया ?

रमजू--मैं अपनी बीवीके लिये। मैं खून पीऊंगा अपनी बीवीका और इस मूंजीका भी।

दिलेरखान--चुप बदमाश मेरेही बापको गालियां देता है।

मुफलिस, और रमजू--क्या, शेरखान आपके वालिद हैं?

दिलेरखान--हां, इसी चंचलकी फितना अंगेजीसे मैं निकाला गया था। अच्छा अब तुम जाव, मैं सबको बताये देता हूं। मैं कुल बातोंका फैसला करने आया हूं, खबरदार, मेरे बगैर कोई कारवाई न कीजिये।

अंक पाहिला—परदा सातवां।

(पुल मैं दरिया)

आतिशखान--वो मारा, चारोशाने चित्त, इन्तेकाम लिया, और पूरा लिया।

तीरे सितमसे उसके बिसमिल बनाके छोड़ा।
दामने तमकीनके टुकड़े उड़ाके छोड़ा॥

हामिद०--- अरे ओ सामनेसे शाहरू की सवारी आती है, चलो बेगम साहब को आदाब तसलीमात बजा लायें।

गाना

दूल्हा के घरको चलते हैं,
सबसों मिलकर सुंदर गावो
प्यारी पालकीमें सवार है।
देखो भालो हुं हुं हुं,

बांया दांया हुं हुं हुं,
ऊंचा नीचा हुं हुं हुं ॥
कांधा बदलो हुं हुं ....दूल्हा० ॥

हामिद और आतिशखान--आदाब अर्ज है जनाब बेगम, साहबा ?.

आतिशखान--अब वो आपका महेल सरेनव है ?

हामिदखान--उजाड़ झोपड़ा ?

आतिशखान--बहोत नजदीक है ?

हामिदखान--और हमको वहां तक शानोशौकतसे पहुंचा देना जरूर है ।

बांकेखान---क्या कहा, वो खानाखराब, चलो कहारों पालकी को आगे बढ़ावो ।

आतिशखान---भला हुजूर, हम चूं करें मूंसे । ये जंगे अरगरी हमतो हैं आपके सेक्रेटरी ।

हामिदखान--अरे ओ सेकरेटरी, अभी तो बेगम साहबसे लेना है मेहनतका इनाम ।

बांकेखान--अरे ओ बाजरी परदा फरोशीके दल्लालों, तुम्हें तो अपना इन्तेकाम लेना था सो ले लिया अब उसके पास आनेकी क्या जरूरत ?

आतिशखान—अरे वाहरे तेरा दावा ।

बांकेखान--अरे कम्बख्तों, मेरा तो दावा तभी है, जब वो मेरे कब्जेमें आजाय, तो क्या मजाल है जो कोई भी नजर उठाकर उसे देख जाय ।

हामिदखान--ये बिचारा तो ऐसी पोशाक पहिनकर फूलगया है, अपनी औकातको भूल गया है ।

आतिशखान--अगर भूल गया है तो फिर याद दिलायेंगे, इसको अपने घरका बागबान और उसको माशूक बनायेंगे ।

बांकेखान--अरे बुजदिलो, अगर ज्यादा बक बक करोगे तो इस तलवारसे अपने खूनसे आपही नहाओगे ।

आतिशखान--अजी हजूर आप अभी खून में न नहलाइये, अभी तो हमको इस माशूकके पहलू में लेटना है और इसके पसीनेमें नहाना है ।

बांकेखान--इस हूरे जन्नतका पसीना और तू कमीना, खबरदार होशियार होजा पहलू में गोली खाके, लहदमें सोजा ।

आतिशखान--हैं ! हैं !

हामिदखान--आतिशे रकवतमें उसको जला दिया, हमेशाके लिये खामोश बनादीया, तो अब मैं इसको छोड़ूंगा नहीं, इसको कफनाके दफन करूंगा। अगर इस रूसियाको खाक में न मिलाऊं तो अपना नाम हामिदखान न पाऊं ।

गाना ।

जा जा जा जाके कब्र में मैं इसे दूं सुला,
हय वो बचा मुझसे भला कहां जायगा जाजा जा जा।
ओ पुरगम ओ बेहया
क्या जी में आई मोसिम पै अपने गोली चलाई
अये रहनुम लुच्चा तू पाजी
तू अदना तू काला तूझेकर फिना
तुझे खाऊं कच्चा जा जा जा जा............

ड्राप सीन ।

अंक दूसरा । परदा पहिला ।

(गाना गोरकन्दों का)

कैसे कैसे जीसान हुवे इसजां
वे निशां पीर पैगम्बर आला आल
कैसे कैसे० ।

करलो भाइयों कुछ करलो नेकी
वरना पछताओगे, बतलावोगे क्या वैसे एमहां
कैसे कैसे० ।

हामिदखान—अरे ये, तुम क्या करते हो, संदूक को लहद में क्यों नहीं धरते हो ?

गोरकन्द—बहोत अच्छा हुजूर मगर पहिले हमारा मुखती खाना तो दीजिये ।

हामिदखान—अच्छा ये लो तुम्हारा मुखतीखाना सब काम बदुरस्ती जरा देर न करना, अब मैं यहांसे जाऊं और उस रूखियाको खाको खूंमें मिलाऊं ।

गोरकंद—चलो यारो इसको कफनायें, दफनायें, फिर अपने घरको जायें ।

पहिला गोरकन्द—अरे भू भू भूत ।

जमादार—कहां है ओ भूत ।

गोरकन्द—इसके अंदर

जमादार—जरा हिम्मत कर ।

गोरकन्द—पाओं थरथराता है ।

गोरकंद—कलेजा फड़ फड़ाता है ।

जमादार--अरे ओ बुजदिलो हमतो बड़े बड़े वियाबानोंमे जाते है वहां कोई भूत शयतान देख नहींपाते हैं, तो एकही जलतू जलालतू आई बला सम्हाल तू ।

आतिशखान--हैं ये मैं कहां, कब्रस्तान, जंगल बीयाबान, अहाह अब मुझे मालूम हुआ, शायद उस बदबख्तने मुझ पर गोलीका वार किया था, तो मेरा दोस्त हामिदखान मुझे मुरदा समझकर दफन करने के लिये यहां लाया था, अब मैं यहां से जाऊंगा और उस रूखियाहको खाको खूँ में मिलाऊंगा ।

गाना ।

काटूं तेरा गला, मूंजी तुझे मारूं
सीना चाक करूं ....
ढूंढूं छानू, रहने न दूं मुंजी कभी तुझे जीता ।
काटूं तेरा गला, मूंजी० ।
जहां जाये वहां मैं पीछे जाऊं
छोड़ूं न कच्चा खाऊ
कैसे बचे जान कीनेसे
मारा जवाब मैं भी युं कोनेसे
चाक करू मैं सीना
काटू तेरा गला मूजी तुझे मारूं ....—

(जाना आतिशखान का)

अंक दूसरा परदा दूसरा ।

महेल अगला ।

चक्कर--मसल मशहूर हैं कि बारह बरसके बाद बुरेके दिन भी भले आते हैं । जहां कूड़े कतवार का ढेर लगा रहता है, वहां महल पुरबहार तैयार होता है ।

सफदरखान--अरे चक्कर कम्बख्त, मैं तो इस वक्त धोखा खा गया, मैं समझा था कि शायद कोई दूसरा शादीका ख्वास्त-गार आगया ।

चक्कर--जी हां,जनाब तो क्या आपही शादी करेंगे, बलके आपके साथ हम भी खाना आबादी करेंगे !

सफदरखान--किस रश्के कमरसे ?

चक्कर--वोही बावरचीकी नूरे नजरसे !

सफदरखान--अहाहा, इस पर भी इस मकानके शामयेने असर किया, जो कम्बख्तने शेरखान को बावरची समझ लिया ।

चक्कर--जनाब,यहां परतो मेरी वो खिदमतगारी होती है, जैसे समंद अरबीकी नाज बरदारी होती है, ये जूतीलाल और ये कारचोपीका रूमाल और ये काश्मीरी शाल और वो नरम नरम विस्तर, ये सामान मेरे बापको भी नसीब न हुआ होगा ।

सफदरखान--कमबख्त तुझको नरम विस्तर और हमको फटा पुराना टुवाल,तेरीशान और मेरी ये तहकीर ।

चक्कर--जी हां,अपनी अपनी तकदीर ।

नौकर--जनाब आपको बीबी साहेबा नास्ते केवास्ते बुलाती हैं।

सफदरखान---अच्छा उनसे कहदे कि मैं अभी आता हूं !

नौकर--कम्बख्त तू कौन है,कौड़ीका नौकर,अपनी औकात के माफिक बातकर।

चक्कर--अजी,ये मुजको जनाब कहता है,क्योंकि मुझे चक्कर के बजाय ये नाम पसंद है ।

सफदर खान—अच्छा जनाब, इस नौकर की तरह मुझे भी कुछ इस्तेहा गालिब है, इस लिये कुछ मक्खन रोटी लाना मुनासिब है।

नौकर—मक्खन रोटी, आहा हाहा, आहा हाहा ।

चक्कर—क्या मक्खन रोटी, अहा हाह आहा हाहा ।

सफदर—क्यों बे,चक्कर, कम्बख्त मेरी हँसी उड़ाता है. हंसकर दांत दिखाता है,ठहर जा मैं अभी तेरे दांत तोड़ता हूं।

चक्कर—अरे बस बस साहब, अगर मारसेही पेट भर आयगा तो फिर नाश्ते के लिये जगह बाकी न रहेगी, अगर मैं नास्ता न करूंगा तो मेरी सास वो जोरू रोरोके आंसू बहायेंगी।

नौकर--जनाब ये आपका नौकर बड़ा बेहूदा है, कहिये तो मैं इसको लगाऊं दो चार।

चक्कर—अरे बस बस, तू इसे मत कह, चल पहले नाश्ता कर आवें, (सफदरसे)जनाब आप यहां ठहरे मैं आपके वास्ते पियाज और बासी रोटी भेज देता हूं।

सफदर—पस अब मुझे मालुम हुआ,शेरखान मुझे तुम्हारी लड़की तो पसंद नहीं है. मगर इस दाममें हैं तीन चार

हंसीन, जिस्में एक है मेरी दिलनसीन आहा वोही साम्हने से आती है।

किधरको चली हो दिलरुबा सुनोतो सही।
खोदाके वास्ते ठहरो जरा सुनोतो सही॥

दिलरुबा—अए वाह अब तो तुम्हें मेरा नाम भी मालूम होगया मगर मैं कहती हूं।

तुमतो टोका न करो राह में आते जाते।
छेड़ते क्यों हो मुझे राहमें आते जाते॥

सफदर—तुमजो धरती हो कदम राहमें आते जाते;
वहरे दीदार सनम राहमें आते जाते।

दिलरुबा—तू एक अदना खिदमत गार, तुझको मुझसे ऐसी बातें करना कम है सजावार।

गाना

बुल बुल गुलसन करे जाग से.
नाही सोहे जाग गुले तर से,
चाकर को बतियां सोहाये रे
मैं नवारूं एड़ीपै........बुल बुल०

सफदर—प्यारी मैं कोई नौकर नहीं!

दिलरुबा—तब?

सफदर—मैं सफदर हूं, सफदर!

सफदर—देखिये, ये मेरी, और ये मेरे वालिदकी तसबीर, मौजूद है। अबतो तुम्हारा शुबहा नाबूद है।

दिलरुबा--तब तो माफ कीजियेगा, मैंने जो तुमको नाशाइस्ता अलफाज कहे हैं।

सफदर-- अजी नाशाइस्ता क्या, ऐसी नाजनीको सात-खून माफ,हैं मगर ये माफी मसलहतके खिलाफ है। मैं तो तब माफ करूंगा, जब इसका बदला लूंगा!

दिलरुबा---अरे वाह बदला भी लोगे और माफ भी करोगे? तो क्या मारोगे लात और घूंसा।

सफदर-- प्यारी नहीं, फकत् एक बोसा।

गाना

दिलरुबा—मचल न मचल जरा संभल।
आओ आओ जाओ जाओ॥
मचल न मचल जरा संभल।
जरा आतू दिलदार छोड़ो इसरार।
जारे बदकार न मानूं जिनहार।
मोरी प्यारी प्यारी जां।
जारे जारे जा शयतान........

सफदर---अब मुझे मालूम हुवा, ये मुझ सफदर को चक्कर समझते हैं और चक्कर को सफदर, तो मैंने भी अपने दिलमें यही है ठाना, के मैं बनता हूं चक्कर और चक्करको बनाता हूं सफदर, इस तरह अपने नौकरकी सादी चंचल की लड़कीसे कराऊंगा, तो अपनी बेइज्जतीका बदला पाऊंगा।

(जाना सफदर का।)

अंक दूसरा—परदा तीसरा

झोपड़ी ।

बुढ़िया---शुक्र है खोदाका, कि मेरा बेटा माहेरूके साथ शादी करके आता है और कोई दममें यहां आता है। जिगर में मैं हयरान हूं कि माहेरू एक अमीरकी लड़की है और मेरे बेटेसे किस तरह शादी करने में राजी हो गई, आवो आवो मेरे बच्चों कुछ औरतो नहीं जो तुम पर वारूं अश्के खुशीके लालो गौहर निसारूं।

माहेरू--क्यों प्यारे ये वोही बुढ़िया है, जिसका तुमने रास्ते में जिक्र किया था।

बुढ़िया---ऐ मेरी जानसे अजीज बेटी इस घास की ढेर पर बैठजा। और ये शाल मुझे देदे, मैं इसे संभाल कर रक्खूं। हैं हैं दूर क्यों हो गई, क्या मैं हूं कोई पराई।

माहेरू--हैं बेटी और पाराई, हुजूर इसे मने तो कीजिये। शायद इसकी और आपकी मुल्के आरकटकी पुरानी जान-पहचान है। अए बी ताब, जरा अपाना मुं सभाल और अपना रुतबा देख भाल, बेटी किसको कहती है। बी ताब, मैं हूं बेगम और मेरा मियां नव्वाब।

बुढ़िया---हैं,बेगम और नवाब, खुलगया शादीका राज, बेटी तुमने बहोत धोखा खाया।

माहेरू—अरे धोखा, धोखाकैसा, अरे बोल, बोल, राजे सरबस्त खोल।

बुढ़िया—जिस्को समझती है नव्वाबवांका।

वो लड़का यहां के है एक बागवांका॥

न रख बेगम और नव्वाब की आस ।
ए लड़का मेरा है और मैं तेरी सास ॥

माहेरू--हैं.प्यारे,ये बुढ़िया क्या झख मार रही है,आप मेरी हदक इज्जती को गवारा कर सक्ते हैं ?

बुढ़िया--ओ नाआकबत अंदेश बेटे, तूने ये क्या किया ? अमनो अमानकी झोपड़ी में आग लगादी,बैठे बैठाये कयामत मचादी ।

(जाना बुढ़ियाका)

माहेरू---अच्छा हुआ, ये बुढ़िया यहांसे दफे हुई, क्यों प्यारे,जरा मेरी तरफ तो देखो, क्या ये बुढ़िया सच कहती है, शायद मुझे आजमाती है, तुम जैसा नेकसिफात और करे ऐसी बदी की घात, गलेलगाके गरदन मारनेवालोंमें तो नहीं हो ? सेहरा बांधके कब्रमें उतारनेवालेतो नहीं हो ? प्यारे साफ साफ सुनाओ, अब ज्यादा न तरसाव ।

बांकेखांन--माहेरू, माहेरू, बराये खुदा ये हाल मुझसे न पूछ. अगर तेरे दिलमें रहेम और इनसाफ का कुछ हिस्सा बाकी है, तो बजाये दरयाफ्त करने के एक दफा मुझे देख ।

माहेरू---क्या ये बुढ़िया सच कहती है !

बांकेखांन--जो कुछ इस बुढ़ियाने कहा...

माहेरू—क्या सच है ?

बांकेखान—मैंने वो किया जो मुझे करना न चाहिये ।

माहेरू—क्या ?

बांकेखान—मैंने वो किया जो मुझे करना न चाहिये ।

माहेरू---खुलासा ?

बांकेखान—खुलासा ये कि जो कुछ मैं हूं वह नहीं हूं !

माहेरू—तब ?

बांकेखांन—मैं एक गरीब बांकेखान ।

माहेरू—ओ खोदा, इलोशां, आमान आमान।

बांकेखान—माहेरू, माहेरू, बराए, खोदा मुझे माफकर, जो कुछ होना था वह हो चुका ।

माहेरू—बस, बस, गफलत का पर्दा आंखोंसे उठगया, ओ सितम शोख आदमी, तूने मुझे माहीये बेआब करदिया, ओ भोली लड़की पर पत्थर बरसाने वाले, तूने मुझे गरके आब कार दिया । बता, बता, ओ सितम शोख आदमी, मुझे सताके क्या फल पाया ।

बांकेखान—अफसोस मैं इस काबिल न था !

माहेरू—तब !

बांकेखान—जालिम या मजलूम जो कहो एक दिल था। जो बरसोंसे इस हुस्ने अफरोजका माइल था ।

माहेरू—ओ कम औकात आदमी, तू अदना कंगाल और अमीर जादीयोंके हुस्नपर फरेफ्ता होनेका खियाल ।

बांकेखांन—

ऐ नौनिहाल क्या जुरम है उल्फत गरीब की ।

दाखिल गुनाहमें है मोहब्बत गरीब की ॥

इश्को मोहब्बत का सिलातो हर शख्त को हासिल है !

माहेरू—अफसोस, जो ऐसा बंदा खूबसूरत हो, उसमें बदीकी डरावनी सूरत हो, हुस्न ऐसा पुरजफा, और फेल ऐसा पुरदगा ।

चशमए आबे बकामें छुपके बैठी है कजा ।

जाहिरमें भेड़नी है और बातनमें भेड़िया।

बांकेखान--माहेरू, माहेरू, अगर मेरे दिलमें तेरी मोहब्बत न होती, तो मुझमें इस कामकी जुर्रत न होती, देखले प्यारी माहेरू देखले, इनप्यालों पर और इस तलवार पर, नाम है लिक्खा तेरा सारे दरो दीवार पर।

माहेरू--(देखकर) हैं या इलाही ये क्या माजरा है, जहां देखो वहां मेराही नाम लिक्खा है।

बांके खान--और तेरे हुस्नकी लियाकतमें कुछ शायरी भी पैदा की है।

हसीनोंमें बे मिस्ल तू माहेरू है।
महो मेहेर को भी तेरी जुस्त जू है॥
गुलिस्ता में जाके हरेक गुलको देखा।
न तेरीसी रंगत न तेरीसी बू है॥
समाई है नजरों में ऐसी तू मेरे।
जिधर देखता हूं उधर तूही तू है॥

माहेरू--या इलाही, ये क्या इसरार है, इसकी गुफ्तगूसे तो सच्ची मोहब्बत इजहार है।

बांकेखान--और दूसरी मिसाल मेरी सौदाई की।

(तसवीर दिखाना)

माहेरू—हैं ये तो मेरी तसवीर है?

बांकेखान--हां, येही बद्रे मुनीर है?

माहेरू—ए तसवीर किसने बनाई।

बांकेखान—इसे तेरे सौदाईने बनाई।

माहेरू—मगर तुम मुसव्वर हो या बागवां।

बांकेखान—न मुसव्वर, न बागबां, फकत् तुम्हारा नीम जां।

माहेरू—या इलाही, क्या सच कहता है, कि मुझको इस-कद्र चाहता है, इसकी तकरीरसे तो सच्ची मोहव्वत अशकार होती है।

खिंचरहा है दिल ये किसकी चाह दामनगीर है।
गो ये वोहै जिसने मेरे दिलपर मारा तीर है॥

बांकेखान—जब तेरे इश्कका सौदा मेरे दिलमें समाया, तो आतिशखान और हामिदखानने मुझे नव्वाब बनाया, मगर मैं किये पर पछताता हूं। आमां, आमां, आमां।

(हामिदखान का आना)

हामिद खान—आहा कैसी खुफ्ता बख्त खामोश है, आज-हद् फरामोश है, इससे पहले इस अजल रसीदा के नालां नहीं देखे थे।

बांकेखान—ये कौन है शैतान ?

हामिदखान—कौन मैं हूं दोस्त बांकेखान !

बांकेखान—दोस्त नहीं बलके एक जान और दो पोस्त, मगर येतो बता के तेरा यहां किस तरह आना हुआ ?

हमिदखान—यौंही सिर्फ तीन चीजोंके लिये !

बांकेखान—तीन चीज ?

हामिदखान—हां तीन चीज !

बांके०—कौन कौनसी ?

हामिद०—एक अंगूठी और दूसरा हार !

बांकेखान—और तीसरी ?

हामिद०—तेरी ये गुलजार

बांकेखान—बहोत शौकसे ले, मगर एक चीज मुझे भी दे ?

हामिद०—क्या कहा मेहरबान !

बांकेखान—ओ बेइमान, अपनी जान खबरदार, मूंजी अगर अबकी दफे इस पाक दामन का नाम लिया तो तेरा सर इस तन से उड़ा दूंगा । इन चीजोंमें से एक भी न-दूंगा !

हामिदखान—क्या मेरी जान ?

बांकेखान—हां, तेरी जान !

हामिदखान—हां, मालुम हुआ, इसके सामने जितनी नरमी की यह उतनाहीं अकड़ता है, सरझुकाव सर पर चढ़ता है। ले खबरदार, ओ मूजी अगर तुझको भी आतीशखानके साथ मुल्के अदम न पहुंचाऊं तो सही और इस माशूकासे मिल-कर गुलछर्रें न उड़ाऊं तो सही । बोल, बोल, जबां खोल ।

बांकेखान—बराये खोदा ओ सैयाद क्युं बुल बुल को गुल से उड़ाता है, तुझे जरा रहेम नहीं आता है ।

माहेरू—या कादर सुभानी ये क्या रंज का सामान, कौन हामिदखान !

हामिदखान—हां, हामिदखान, माहेरू, माहेरू, मेरे नजदीक न आना, मैं तुम्हारा ही बदला लेने आया हूं और इसके किये की सजा देने आया हूं ।

माहेरू—मेहेर बानी, नवाजिश, मगर ऐ मेहरबान जरा हाथ रोक और मुजरिम को मोहलत दे !

हामिदखान—किसलिये ?

माहेरू—इस लिये, कि मैं अपने हाथसे इसके गले पर खंजर चलाऊंगी तो आराम पाऊंगी !

हामिदखान—माहेरू, माहेरू, शायद तेरा नाजुक हाथ रुक-जाय ?

माहेरू--नहीं, नहीं, मेहरबान मेरे हाथमें इस वक्त कम ताकत है, मगर अब मुझमें रुस्तम कीसी हिम्मत है, आज मैं अपने दुशमन को वो रंग दिखाऊंगी, जरा उसके खूंनमें नहाऊंगी !

हामिदखान--अच्छा तो ले खंजर चला।

माहेरू--तबतो तूही बता, ओ मूजी, जब तूनेही मेरी इसके साथ शादी कराई है तो उसके कत्लका बाइस क्या ?

हामिदखान--तो क्या मुझे मारना चाहती है !

माहेरू--हां, हां, ऐ मूंजी मैं माहेरू तुझे ही मौतके घाट उतारना चाहती हूं--

हामिदखान--आह !

(माहेरू का हामिदखान को खञ्जरसे मारना)

अंक दूसरा—परदा चौथा

अगला महेल ।

सफदर—मसल मशहूर है कि जैसा देस, वैसा भेश, मगर हमने तो इस मकानके सत्यानाशीके मुताबिक बदला है अपना भेस, अब मैं सफदर बनाहूं चक्कर और चक्कर बना है सफदर, अब आगे अपने अपने नसीब और अपने मुकद्दर ।

शेरखान—ऐ क्यों मियां चक्कर, आखर आगये न अपनी असलियत पर, सच है नौकर को नौकर अपना चाहे अफसर को अफसर ।

सफदर--(तू आगया बेइमानेयाज) जी हां वो लिबास तो मुजको अजहद नागवार था, मगर आपके हुकुमसे लाचार था ।

चक्कर--चक्कर, चक्कर, अरे कहां मरगया चक्कर ।

शेरखान--देखिये हमारे दामाद साहब आते हैं ?

चक्कर--खबरदार अब मैं सबको जताये देता हूं कि कोई मुझको चक्कर वक्कर न समझे, अबमैं ये लिबास पहन कर बजाये चक्कर के सफदर बना हूं और अपने मालिकके हुकुमके मुताबिक पूरा पूरा पार्ट करूंगा । चक्कर, चक्कर ?

सफदरखान--जी हाजिर हुआ हुजूर !

चक्कर--अरे बेवकूफ, गुलाम, अदबसे कर कलाम, पहले तीन बार झुककर कर सलाम ।

सफदरखान--सलाम, सलाम, सलाम, साहब माफ कीजियेगा ।

चक्कर--अरे मैंने तुझे हजार बार माफ किया, फिर भी तू नहीं बाज आया, ताबख्त तेरी सजा है कि कान पकड़कर उठ बैठ ।

सफदरखान--हश ।

चक्कर--कान पकड़कर उठ बैठ, कर देख इस तरह कान पकड़कर उठ बैठकर ।

सफदरखान--तोबा, तोबा, तोबा ।

चक्कर--और इस रूमाल में खास इसतमबोली इतर लगाना और लवंडर भी लगाना और सुन चमेली और बेलाका तेल भी लगाना और सुन सेन्ट मेन्ट जो कुछ मिले सब लगाना और सुन इधर आव मेरा बूट तो साफकर ।

सफदरखान--तोबा, तोबा, तोबा ।

चक्कर--अबे जल्दी साफकर, अरे कमबख्त ये तू ने क्या किया, अप ने सड़े हुवे चिथड़ों से मेरा बूट मैलाकर दिया । चाट,

चाट, गंदे नोकर जबानसे चाटकर साफकर।

सफदरखान--अबे मैं तेरी हड्डी नरम कर दूंगा। अरे चक्कर बदजात. समझकर कर बात।

चक्कर--नहीं तो जनाब आप खाइयेगा लात, देखिये अब मेरा कहना मान लीजिये एक जरासी जबान लगा लेनेसे क्या हरज है?

शेरखान--चक्कर, चक्कर!

चक्कर--जी हुजूर?

सफदरखान--हुजूर होशमें हैं या नहीं। जी, हाजिर हुआ हजूर!

शेरखान--आइये बाबःचीखाने में जाइये, खाना तैयार है। वाह मियां सफदरखान, इस वक्त तुम्हारी औरही है आन बान।

चक्कर--आप मुझे कहते हैं या सफदर को, अरे भूला सफदर तो मैं ही हूं। जी हां आपने अभी मेरा देखाही क्या है मेरा नौकरोंसे यही बरताव है और जब मैं बावरची खाने में जाता हूं, तो नौकरों को ऐसा दुरुस्त करता हूं, कि आप देखेंगे।

शेरखान--जी हां, नौकरोंके साथ हमेशा ऐसाही बरताव रखना चाहिये, वाह हमारे दामाद साहब कैसे चलते हैं जैसे रूसके शाहंशाह।

चक्कर--बेशक ये मेरा रोबोदाब. जैसे बड़ोदेके नव्वाब, अरे खोदातो मुझे किसी शाहंशाहके घर पैदा करने वाला था, मगर अफसोस कि फरिस्तोंसे जरासी भूल हो गई, जो मेरी शाहंशाही खाक धूल हो गई।

शेरखान—शुक्र है खोदाका, कि तू शाहंशाहके घर पैदा नहीं हुआ और नहीं तो मेरा दामाद कहांसे होता ।

चक्कर—बेशक, ये चाल मैंने एक नाटकके लड़केसे सीखी है । इस तरह चलना क्या सबको आता है, मगर जनाब ये तो बताइये कि आप अपनी लड़कीके दहेजमें क्या क्या देवेंगे ? मैं तो पहलेहीसे कहता हूं कि मैं सिर्फ नोट और बैंक के चिकही लूंगा, क्योंकि मेरे मकानमें चटाई, चारपाई, रजाई, रोटी, तवा, अंगारी, मुरगी, बकरी, बीबी, बगैरह बगैरह सब कुछ मौजूद हैं । सिर्फ नकद और हुरमतकी जुरूरत है ।

शेरखान—(लाहोलबला कूबत, इतना बड़ा अमीर और बातें ऐसी जैसे भिखारी फकीर, मगर सच है, उसकी निगाह में ऐसा आला सामान भी क्या मालूम होता होगा ।) जी आपतो बड़े दिल वाले हैं ?

चक्कर—जी हां मेरा दिलतो बहोतही बड़ा है । एक बड़े से बड़े तराजूसे भी बड़ा है !

शेरखान—लाहोलबला कूवत, मुझे भी अजब किसमका दामाद मिला है ।

चक्कर—अजी हजरत, अजी जनाब, अहाहा, हां ससुरे साहब खफा हो गये, अजी होने भी दो, इसका क्या गम है । सामनेसे सादकखान आते हैं । चलो बच्चा चक्कर अब यहांसे भाग जानाही बेहतर है ।

सादक—मैं एक अपने बेटे सफदरखानकी शादी करनेके वास्ते आया, मगर यहां तो किसीको भी नहीं पाता हूं, अबे कोई घरमें है, अबे कोई घरमें है ।

मुफलिस—जी हुजूर !

सादक खान—जाव, शेरखानसे ये कहो कि सादकखां तुमारी मसजिद में आये हैं ?

मुफलिस—बहोत अच्छा हुजूर. मगर आपके मिजाज तो अच्छे हैं ?

सादक खान—हैं बे बदलगाम गुलाम, तुझे हमारे मिजाज्ज पूछनेसे क्या काम ।

मुफलिस—अल्लाह ए तो बड़ा गरम मिजाज है, जनाव मैने इस वास्ते पूछा था कि आज कल हमारे आका शेरखान के मिजाजके थर्मामेटरका पारा एकसौ नंबरसे भी जियादा बढ़ गया है । शायद कहीं आपका मिजाज भी न बढ़ गया हो ।

सादक खान--क्यों शेरखानको क्या होगया है ?

मुफलिस--अजी जरा उन्को कानोंसे कम सुनाई देता है !

सादक खान--तो क्या शेरखानके दोनों कान बंद होगये अच्छा चलो जरा मैं भी देखूं ।

मुफलिस--अब मैं जरा शेरखानको भी उल्टा पढ़ाये देता हूं ।

सादक--(मारके) चोर हरामखोर, बताता है या और लगाऊं ।

चक्कर—अरे बस,बस,साहब माफ कीजिये मेरी पीठ उधड़ गई । तातोंकी जढ़ तक उखड़ गई ।

सफदर खान--अरे है चक्कर ?

चक्कर खान—अजी जनाब जल्द आइये और मेरे इस लि-

वास पहनने का बाइस तो बताइये वाह जनाब आपने तो मेरी खूब शादीकी ?

सफदर--अब्बाजान मैं सब करता हूं बयान !

चक्कर--कम्बख्त अभी शादी वादी तो हुई नहीं, इससे पहले कितने झमेले हो गये। अब तो मेरी शादी गुजरनेमें मुझे शक पैदा हो गया, कम्बख्त बरसात पड़तेही ये मेंडक पैदा हो गये।

सफदर--अब्बा जान सबने मुझे चक्कर और चक्करको सफदर समझ लिया और मेरी शादी एक नालायक लड़की से करने वाले थे तब मैंने यह काम किया।

सादक खान--हैं,हैं, शेरखान को क्या होगया, अच्छा जाव बेटा अपनी पसंदकी हुई दुलहनको ले आव।

(शेरखानका आना)

सफदर--वाह जनाब, आपने तो मेरी अच्छी दावतकी. आये हुये तीन घंटेका अरसा हुआ, मगर खबर तक न ली।

शेरखान--जी हां, मैंने खबर पाई कि आप अपने बेटेकी मुलाकात को चले गये।

सादक खान--सच है कि बहरे आदमीको जोरसे बोलने की आदत पड़ जाती है सो वो बात सच्ची नजर आती है। जनाब मैंने आपका हाल सुना है, सुनकर अजहद मलाल हुआ है ?

शेरखान--और जबसे मैंने आपका हाल सुना है, सुनके अजहद रंज हो रहा है ?

सादक खान--क्या आपने किसी डाक्टर वाक्टरका इला-ज भी करवाया है।

चक्कर—वाह कम्बख्त दोनों पागल हो रहे हैं चीख चीख कर एक दूसरे का मगज खा रहे हैं।

सादकखान—यों तो एकतोजाये जईफी है, मगर क्या आइन्दा आपको अपना भला बुरा भी समझाई नहीं देता, येतो और भी बुरा है।

शेरखान—क्या सुझाई भी नहीं देता एतो औरभी बुरा है।

सादकखान—बुरा नहीं तो क्या भला हुआ,एक तो नफ़स दूसरे शादी करने की दिलमें हवस।

शेरखान—तो क्या आप भी शादी करेंगे?

सादकखान—अजी नहीं, मैंतो आपसे कह रहा हूं—

शेरखान—तो आपने मुझे जियादा बुड्ढा समझा है। खोदा-के फ़जलसे अभी मेरे तमाम आसाब दुरुस्त हैं।

सादकखान—तो फिर आंखोसे अंधा और कानोंसे बहेरा मैं या हजरत सलामत।

शेरखान—लाहोल बला कूबत, ये तो अजब बात है, कि मैं आपको बहेरा समझूं और आप मुझे।

सादकखान—व—शेरखान—आहाहाहा, तोबा, तोबा।

सादक खान—जनाब, मैंने सुना है, कि आप कानोंसे बहरे होगये हैं?

शेरखान—और जनाब, मैंने भी सुना है, कि आप के कानों पर बे समाती के चौकी पहरे हो गये हैं?

सादकखान—ये आपको किसने बताया?

शेरखान—अजी वही आपका नौकर मुफलिस!

सादक खान—मेरा नौकर मुफलिस?

शेरखान—जी हां, ये आपका नौकर बड़ा फितना अंगेज

है और आप उससे भी बढ़कर फरेब आमेज हैं ?

सादक खान--क्या कहा मेरा नौकर मुफलिस ?

शेरखान--आपके फरजंद दिलबंदने यहां आकर ये गुल खिलया नौकर को मालिक बनाया, और आप नौकर बने, मगर हमकोतो पहलेहीसे मालूम था. हमने उनको उम्दा, उम्दा, लेवास पहनाया।

सादकखान--आपके हवाश खमसा में जरूर खलल आ गया है ?

शेरखान--क्यों ?

सादक खान--क्योंकर जो काम है, आपका उल्टा है !

शेरखान--वह क्यों ?

सादक०--न तो कोई मुफलिस मेरा नौकर है और न किये मेरा बेटा सफदर है, बलके ये सफदर का खादिम चक्कर है !

चंचल--हैं क्या चक्कर ?

दौलत--है, है, फूटे मुकद्दर।

(सफदर और दिलरुबा का आना)

सफदर--देखिये अब्बाजान येही है मेरी दिलरुबा जी शान।

दौलत--अरे ये चुड़ेल बीच में कहांसे कूदपड़ी।

सादक खान--बेशक बेटा जिसका तू शायक है, वो हर तरह लायक है। अब मुझको शेरखानकी निसबतसे बिलकुल नफरत हो गई !

शेरखान--हैं क्या नफरत ?

सादक खान--जी, हां, नफरत !

शेरखान—तो क्या आप शादीका इसरार करके तोड़ना चाहते हैं निसबत ?

सादकखान--हमने आपकी लड़की से इसरार किया था न कि इस बेवा हरजाई की !

चंचल---क्या मैं हरजाई बेवा हूं। बोलते क्यों नहीं मूं क्यों बन्द हो गया।

शेरखान--अरी चुड़ैल तूनेही मुझसे कहा था कि सच्चा सफदर येही है !

चंचल--या अल्लाह, कैसी हेकारत की बात है यहां कोई इन्साफ करने वाला भी नहीं है !

मुफलिस--बीबी साहब मैं किसी इन्साफ करने वाले जज कोबुला लाऊं ?

चंचल---अरे मुवे, तू कौन जज को लाने वाला है, तेरी खोज मिटाऊं !

मुफलिस—आइये जनाब जज साहब इस झगड़े का इ-न्साफ मिटाइये !

सब--हैं ये कौन ?

चंचल—हैं ये कौन मेरा खाविन्द रमजू !

रमजू--चल ?

सादक--देखिये यही है वह आदमी जिसने मुझे आपका बहरा होना बताया था !

शेरखानऔर इसीने मुझे आपका बहेरा होना बताया था !

सादकखान—मगर जनाब ये कोई मेरा नौकर नहीं !

शेरखान---क्यों बे जब तू इनका नौकर नहीं तो यहां कैसे

आया और दोनों को यक़ीन दिलाकर खामखाह बहेरा क्यों बनाया ?

मुफलिस--हुजूर मैंने ये काम इस लिये किया था कि इस चंचल की कारर्वाई इजहार होजाय।

शेरखान--और चंचलको भी तो तूने सफदरको चक्कर और चक्करको सफदर बताया था ?

मुफलिस—वो इस लिये बताया था कि चंचल अपनी लड़की किसी अमीर के गले बांधने वाली थी। ये जाल मैंने इसी वास्ते बिछाया था !

सादक़०—वाह वा, ये तो अच्छा किया है काम; लेओ इसके एवज में पांच रुपयाका नोट ईनाम।

मुफलिस—(शेर खानसे)मगर आपने जो वादा किया था उसे पूरा कीजिये ?

शेरखान--मैंने कौनसा वायदा किया था !

मुफलिस--आपने कहा था कि जब तू डाकुओंके सरदार को गिरफ्तर करके लायेगा तो पांच सौ रुपये ईनाम पायेगा।

शेरखान--तो गिरफ्तार करके लायगा तो उस वक्त ईनाम आप पायेगा।

मुफलिस--अगर हुक्म हो तो मैं उसको अभी यहां लाता हूं?

शेरखान—अच्छा लाव !

चक्कर—अजी जनाब, डाकूको यहाँ न बुलवाइयेएगा ? उसको बाहर ही बाहर बेड़ियां पहेनवाकर जेल खाने भेज वाईये।

(दिलेरखान का आना)

दिलेरखान - सब साहबोंको आदाब बजा लाता हूं ?

चक्कर—ओ बापरे कैसा खौफनाक इन्सान है !

शेरखान—क्या तूही है डाकुओं के फौजका अफसर ?

दिलेरखान—जी हां, बंदापरवर !

शेरखान—मगर तू यहां किस लिये आया ?

दिलेरखान—मुझे भूले हुओंकी याद और बेकसोंकी इमदादने यहां पहुंचाया !

शेरखान—हैं, भूले हुओंकी याद ?

दिलेरखान—जी हां, भूले हुओं की याद और बेकसोंकी इमदाद, जो मुझे दिलसे भुला बैठे थे ?

शेरखान—अरे इन्सानोंके दुश्मन ।

ध्यान कब आया था तुझ बेकसकी इमदाद का ।
तूतो पुतला है मुझ समीप आफतों बेदाद का ॥
तेरे हाथों सोरहै एक खल्क में फरयाद का ।
करता है बरबाद घरतू बस्तीये आबाद का ॥

ए मेरे नौकरों चलो हाजिर हो, बांधो इसकी मुश्कें लेजाव कोतवालके पास ।

दिलेरखान—आप मुझे कैद करवायेंगे, फिर आपही किये पर पछतायेंगे ?

शेरखात—क्यों हम किस लिये पछतायेंगे ?

मुफलिस—मगर जिसकी आप मुश्कें बंधवाते हैं आपको मालुम है ये कौन हैं ।

शेरखान—कौन है, चोर है, डाकू है, कज्जाक है, इन्सानोंका दुश्मने जान है !

दिलेरखान—नहीं अब्बा जान ये आपका बेटा दिलेरखान है !

शेरखान—हैं, कौन मेरा बेटा, दिलेरखान ?

दिलेरखान--जी हां अब्बाजान !

मुफलिस--या अल्लाह तेरा शुक्र ।

शेरखान—ये मेरे लख्ते जिगर अब तक तू था किधर ?

दिलेरखान—अब्बाजान आपने मुझे चंचल की फितना अंगेजीसे घरसे निकाला, मैंने इस वास्ते जंगल में डेरा डाला ?

शेरखान—ओ चंचल पुरदगल मुझे किस असर से जादू किया था, और मुझपर काबू किया था, तैंने मेरे साथ कैसी कैसी बरबादी की, और मैंने दीवाना बनकर बच्चों पर कैसी बेदादी की। मगर मेरी आंखोंकी नूर गुलचेहर है कहां ?

गुलचेहर--क्यों अब्बाजान ?

शेरखान—क्यों ये बेटी तुझे इस शक्सकी है पहेचान ?

गुलचेहर—क्यों भाईजान दिलेरखान ?

दिलेरखान--हां, हमशीरा जीशान ।

चक्कर--ये सब बिछड़े हुए मिलगये, उधर जिसके वास्ते ये तफरीका डाला था वो चंचल गई किधर, हाय, हाय, मेरी होने वाली सास तेरा हो जाय सत्यानास या तजहरुल अजायब, सास गुम और जोरू गायब !

दिलेरखान—अब्बाजान सफदरकी तो दिलरुबासे शादी हो चुकी। और बहेन गुलचेहरकी और उसकी पाबंदी हो चुकी। सो मैंने इसके वास्ते एक नया जोड़ा तलाश किया है--

शेरखान--बेटा वो कौन है और कहां है ?

दिलेरखान--वो अभी यहीं हाजिर होता है !

गुलचेहर—या इलाही, वो कौन होगा, मैंतो हमीदके सिवाय और किसीको नहीं चाहती (हमीद का आना) देखिये !

दिलेरखान—अब्बा जान, आपको है इस शक्स से पहेचान!

गुलचेहर—कौन, मेरा प्यारा हमीदखान।

हामिद—हां ये दिल सेतान।

चक्कर—अरे क्या मामिला है जो आता है वो जोरू वाला होता जाता है, बन्दा चार रोजसे दूल्हा बना रहा, मगर शादी के वख्त नसीब फूट गये।

मुफलिस—हजूर ये सब जोड़े तो मिलगये, मगर एक जोड़ेकी और तलाश है।

दिलेरखान—वो कौन है?

मुफलिस—हुजूर वोही, रमजू की बेटी दौलत, जो अपनी शादी से मायूस हो गई है इसकी मां बापसे सब बातोंका फैसला कर लिया है।

चक्कर—ऐ तूने क्या फैसला कर लिया है, नाहिज्जार दौलत का शौहर होने का हकदार मैं हूं तैयार।

मुफलिस—चल गंवार, झख न मार, अंधे हैं और चूटियों का शिकार।

चक्कर—अबे तू कौन कुत्ता है दूल्हा तो हम बने थे।

मुफलिस—अबे तुझको तो भाड़े का दूल्हा बनाया था, । क्या तू सच समझ गया था कि दूल्हा मैं बनगया। ये मूं और मसूर की दाल, घरमें नहीं दाना, घोड़े वालेको बनाया।

चक्कर—तो तेरे पास क्या धरा है खजाना।

मुफलिस—अबे देख ये रहानोटों का गट्ठा और अभी मिलने वाला है एकट्ठा।

चक्कर—अबे चल तेरे इन कागजोंसे क्या होता है, दौलत बीबी होगी मेरी।

मुफलिस—नहीं, मेरी होगी।

चक्कर—नहीं, मेरी होगी।

सादक—अरे कम्बख्तों क्यों झगड़ते हो, वो है कहां जिसके वास्ते लड़ते हो।

मुफलिस—वो सब मुफलिसमें।

दिलेरखान—लड़ो भिड़ो नहीं, मैं अभी सबका फैसला भिये देता हूं, तुम दोनोको ये मंजूर है कि जिसको दौलत पसंद करे वोही शादी करने में हो कामियाब ?

चक्कर—क्या बात है, डाकू साहेब !

दिलेरखान—तुम दोनो में से जिसको दौलत करे पसंद वोही इसका शौहर लाजवाब क्यो ये बात तुमको है मंजूर ?

मुफलिस—मुजको मंजूर है जनाब !

चक्कर—और मेरा भी यही है जवाब !

दिलेरखान—जा मुफलिस पहले उसे बुलाला ?

मुफलिस—बहोत खूब सरकार ?

चक्कर—हां; अब वो प्यारी आयगी तो बनी हुई बात है मुझको मिल जायगी और ये मियां मुफलिस मूं देखते रह जायँगे।

दिलेरखान—क्यों मियां रमजू जिसे ए पसंद करे वोही शादीमें कामियाब हो, क्यों मियां ये बात तुम को है मंजूर?

रमजू—हुजूर आपके फरमानेसे बंदा कब है दूर !

दिलेर—लो भाई जिसे तुम पसंद करो वोही तुम्हारा खाविन्द है ?

दौलत—हैं ये मूये की नोंक तो लंबीहै, मगर इसका अच्छा है हुस्नो जमील, मुझको तो यही पसंद है।

दिलेरखान—बस, तो ये भी जोड़ा बहेरामद है ।

चक्कर—हत तेरी तकदीर की ऐसी तैसी, जिसके वास्ते इतनी उठाई हलाकानी, आखिर को हुई टें टें, बस अरे दौलत क्या तू मुझे बिल कुल छोड़ देगी, देख मैं तेरे पांव पड़ता हूं एक बेर शादी मुझसे भी कर !

दौलत—मुफलिस तू तो रोनी सूरत है। और ये मुझको दिल से भाता है ।

शेरखान—खोदाका शुक्र है, आज शादी की घड़ी आई, खिजांके दिन गये फसले बहार आई, मिले हकदार को हक-दार और नाहक हो गया नाहक, बजालूं शुक्र तेरा वालिये बरहक ।

गाना ।

गुलांजर खुश गवार है ।
खिला है बिछड़े मिले बिछड़े ॥
दोस्त दार गम निसार ।
चले दोस्त दार गमनीसार............

अंक दूसरा—परदा पांचवां

झोपड़ी बांकेखान ।

गाना माहेरू

आओ आओ रंगीले हां आओ ।
आवो रंगीले आवो, आंओ रंगीले० ॥

मोहे तोरो है आस लगी आवो, आवो० ।
तोरे बिन मोहें चैंन न आवे ॥
नैन नीर भर भर आवे छतियां धड़क रही ।
राम निरंजन आस है तेरो विनती करतु है ए चेरी॥
गुन गाये जो सगरे गुनकर जाये ।
तुहीं है करतार तुहीं है दातार ॥
तुहीं है जगधनी........आवो, आवो ।

बांकेखान—अक्खा ये वोहीगुल है जो नव्वावों और शहेजादोंके पहेलू में लोटने की आस रखता था, अक्खा यह वही बिचारा बुल बुल है जो मुहब्वतके बाग़में झुकनेकी ख्वाहिश रखता था, इसकी नाजुक बाजुक कलाइयां जो नव्वाबों और शाहजादोंके गलेमें पड़ने वाली थीं । आज वो कियांरियों में उलझकर बल खारही हैं । मगर ये सितम इसपर किसने तोड़ा, तूने ओ कम औकात तूने। मजनूने लैलाके लिये जंगल बसाये और फरहादने शीरींके लिये तैश खाये, तू अपने माशूक पर ये सितम ढाये, माहेरू ! माहेरू !

माहेरू— जी ?

बांकेखान—नाजुक अंदाम छोड़ ये काम, और मुझे बता ।

माहेरू—क्या ?

बांकेखान—ये सर किसका है ?

माहेरू—हामिदखान का जिसने आपसे मिल कर मुझे फांसा !

बांकेखान—तो फिर ये मूंजी भी क्यों जिन्दा है, ले, ये

खंजर मेरे पहेलूसे मेरे दिलको निकालकर अपने तलुवेके नीचे मसल डाल ।

माहेरू—नहीं, नहीं, इसमें तेरा क्या कसूर है इसमें मेराही कुसूर है, तू बिलकुल मजबूर है ।

बांकेखान---हैं तेरा कुसूर क्योंकर ? क्योंकर !

माहेरू--वो यों, कि जिस तरहसे फूलकी खुशनुमाई फूलको फाससे तोड़ाती है । और बुल बुल की अबनाई बुल बुल को चमन से छोड़ाती है, इसी तरह मुझे भी तेरे हुस्नो खूबीने फसाया और ये दिन दिखाया, इसमें तेरा क्या कुसूर, है तू बिलकुल मजबूर है ।

बांकेखान—आह, ओ माहेरू ठीक है जिसने तुझसे दगा की उस पर तू रहम का फूल बरसाना चाहती है ।

(अन्दर से)

लड़के—धर, धर, धर, ।

बांकेखान—ले प्यारी माहेरू अब थोड़ी देर बैठजा और मेरेलश्कर का तमाशा देख ।

गाना माहेरू

हमने कुछ दहेर को समझा मगर कुछ भी नहीं ।
ख्वाब था मगर शबका शहर कुछ भी नहीं ॥
बारे गमसे गई यह सूख तमन्ना सरे सब्ज ।
बागबां नखले मोहब्बत में समर कुछ भी नहीं ॥
जिस सितमगार की उल्फत का है दिल दीवाना ।
उसको वहशत की मेरी हाय खबर कुछ भी नहीं ॥

बुढ़िया—बेटी अल्लाह की आमां, तेरा खोदा निगाह बां, तेरे वालिदके यहांसे एक आदमी आया है, और तुझसे मिलना चाहता है ।

माहेरू—हैं क्या मेरे वालिदके यहांसे कोई आदमी आया है। हाय, शर्मिन्दगी, अब मैं ये सियाह शक्ल उसको क्योंकर दिखाऊं, खैर अच्छा आने दो ।

(आतिशखान का आना)

आतिश०—इस वक्त मैदान खाली है और मेरे दिलकी मुराद बर आने वाली है। मैं कमाल अदबसे आदाब बजा लाता हूं बेगम साहेबा ।

माहेरू—क्या तुम मेरे वालिदकी तरफसे आये हो ? और ये बेगमका खिताब भी बाबा की तरफसे लाये हो ?

आतिसखान—न मैं कासिद और न मैं पैगम्बर, न फरिश्ता, होने वाला नामबर का सिर्फ बहाना था, मुझको तो सिर्फ यहां तक आना था !

माहेरू—अगर तुम मेरे वालिदकी तरफसे नहीं आये हो तो फिर यहां किसलिये आये हो ? क्या सबब हीला बहाना करके आनेका और यों बेगमका ताना सुनानेका ।

आतिशखान—ये समयों हुस्न जलाके पवाना ।

हाय, हाय अबतक न जाना ।

जल चुका उल्फत में ये नाकाम है ।

मै मोहब्बत हूं औ आतिश मेरा नाम है ।

(असली सूरतमें आजाना)

माहेरू—हैं कौन आतिशखान मगर तुम तो मारे गये थे,

अजल के घाट उतारे गये थे।

आतिशखान—हां बेशक मैं मारा गया था, अजल के घाट उतरा गया था, मगर लहेद में पड़ते पड़ते फेर मुझे होश आ गया।

माहेरू—मगर अब बता तेरी तमन्ना क्या है, कर चुका वार अब तेरी तमन्ना क्या है?

आतिशखान—मैं यहां इसलिये आया हूं कि तुझको इस दुखसे छोड़ाऊं।

माहेरू—मेहरबानी—मेहरबानी।

आतिशखान—अब मैं तुझको इज्जतसे ले जाऊंगा।

माहेरू—नवाजिश—नवाजिश।

आतिशखान—और मैं तेरी जवानी से जियादा तेरी नाजबरदारी करूंगा।

माहेरू—मुझे यकीन है।

आतिशखान—और मैं तेरे हुस्न को जवाहिरातोंसे दूना करूंगा?

माहेरू—माशाअल्लाह! माशाअल्लाह!

आतिशखान- -देख तू भी जिस तरह तमाम हसीनोंकी सरताज है इस तरह मैं भी इस शहर में सबसे जियादह मालदार हूं। जब कि हुस्न और गौहरे नायाब एक जगह रहते हैं तो वाह वाह फिरतो क्या ही क्या है?

माहेरू—बेशक! बेशक!

आतिशखान—तो फेर चलो।

माहेरू—अजी किधर?

आतिशखान—मेरे घर!

माहेरू--चल, चल, ओ बदजबान अगर अपनी बेहतरी चाहता है तो अपनी जबान बन्द करदे।

गाना

कैसे बेदरदीसे पाला पड़ा।
बनके गले में माला पड़ा॥
माला नहीं दिलमें छाला पड़ा।
छाला नहीं बलके जाला पड़ा॥
मरती हूं गुजरत हूं मुझको संभालिये।
न जान मुझको झूठी तसल्ली से टालिये॥
अये जानी तु मेरी न मानी॥
जा जा यहांसे वो शयतानी।
बनके गले का मैं माला पड़ा॥

आतिशखान--या इलाही ए क्या काया परलट गई, जो कौड़ी चित्त थी वो पट होगई, चल चल मैं तुझे इस भेड़िये के पंजेसे छोड़ाऊं और रेहाई दिलाऊं।

माहेरू--भेड़िये के पंजे से रेहाई पाकर, कसाईके खूंटे बांधी जाऊं?

गाना दोनो का

छोड़ू न तुझको जिद्दी नार।
अब मैं अपने पंजेसे कभी सितम मचाऊंगा।
तुजपर जो जोर गुजारूंगा॥

वो हट हट नट खट ।
मूजी बेईमान शैतान तूफान ॥
दुखिया को न जला ने सता ।
मैंने बतियां झाड़दी गतियां ॥
बन बनी छोड़............

आतिशखान---देख अगर मेरे कहने में अब भी इनकार करेगी, तो मेरा ये खंजर तेरे सीने के पार होगा ।

माहेरू--चल दूर हो नाहिनजार, मुज गरीब का खोदा है हामी वो मददगार ।

आतिशखान--भला देखूं तो कौन आता है । और आके तुझे कौन छुड़ाता है ।

माहेरू--ओ मेरे प्यारे खाविन्द तू जल्दी आ और आकर मुझको इस मूंजी के पंजेसे छुड़ा ।

(बांकेखान का आना)

बांकेखान--तू कुछ खौफनखा मेरी प्यारी दिलदार मैं आ-पहोंचा तेरा हामिद और मददगार ।

आतिशखान--उफ दरवाजा मोकफ्फिल है अब सख्तमुश्किल है । मगर है, ये सर किसका, हासिदखान का, अच्छा, खैर ।

(भाग जाना)

ड्रॉप सीन ।

अंक तीसरा--परदा पहिला।

जहाज दरिया में बन्दरगाह

बांकेखान--जल्द सब्ज झंडी देखाव और जहाज मंगाव।

खलासी--नहीं, तुम यहां से जाव।

बांकेखान--अजी साहब मंगवा दो तुम्हारी मेहरबानी होगी।

खलासी--नहीं, नहीं, तुम यहांसे जाव।

बांकेखान--लेओ तुम भी जहन्नम में जाव।

अंगरेज--क्यों क्या है।

बांकेखान--हमको एक सरकारी कामसे जाना है।

अंगरेज--यहां आओ बैठो।

आतिशखान--हां हां ठहरो ठहरो हम भी आये, चलो चलो जल्द जहाज बढ़ाओ।

अंक तीसरा--परदा दूसरा

महेल खिड़कीवाला।

गाना।

दौलत--

करूं प्यारे पिया पर जिया मैं निसार।

वाहयार आंखतारा, मेरी इस जवानी पै निसार॥

कान में बाली मोतीवाली।

सोहे ओठों पै सुर्खी की धार ॥
कैसी बनी हूं सजीली रंगीली मैं नार।
कमर पतली चाल लचकेदार ॥
प्यारे आवो, न जलावो, जाऊं मैं निसार।

जिसरोज से मेरी मादर ;चंचलने पहले खाविन्दको सदकेका बकरा बनाकर छोड़ दिया है और इस बछुड़ेको पसंद किया है। मैं भी योही क्यों न मांके कदम ब कदम चलूं।

कासिम--अजी बी दौलत दरवाजा खोलो!

दौलत--कौन है, अहाहा, मेरे दोस्त का दोस्त, किधरसे आना हुआ?

कासिम---मैं अपने एक काम को जा रहा था रास्तेमें चक्कर मिले और कहने लगे कि जरा वहां जाना और बी दौलत की खबर ववर लेते आना. लो अब जाते हैं सलाम।

दौलत--अजी क्यों, ऐसी जल्दी में भरे हुवे हो प्यारे, जिस दिन तुम पहले दिन चक्कर के साथ आये थे उसी रोज से मेरी आंख में समाये हो।

कासिम--आह

हमे आप सुरमा बनाये हुये हैं।
जो आंखों में हम यों समाये हुये हैं ॥

वाह वा मैं भी क्या खुश किसमत हूं, कहां तो आया था मियां चक्कर का पयगाम पहुंचाने और कहां बनगया उसका रकीब, अच्छा प्यारी यहां कोई आजाय तो मेरी नानी ही मरजाय।

दौलत---नहीं नहीं प्यारे यहां कोई नहीं आता।

काशिद--कोई नहीं आनेका तो बस आव बैठ जाव।

चक्कर--री दौलत जरा दरवाजा खोलो !

कासिम--अरे हैं ये कौन ?

दौलत--अरे येतो चक्कर आगया ।

काशिम--अरे हैं चक्कर मुझे तो मारे खौफके चक्कर आगया अजी फिर मुझे तू कहीं छुपा ।

दौलत--अच्छा आव आव, इस मुरगी के दरबे में जाकर छुपजाव ।

काशिम--मुरगीके दरबे में ।

(चक्कर को ले आना)

दौलत--अजी तुम किसको देखरहे हो ।

चक्कर--उहूं कुछ नहीं, मगर हां वो कासिम यहां आया था।

दौलत--अजी वह तो आपका संदेसा लाया और बाहर ही बाहर चला गया ।

चक्कर--ऐसा, फिर दरवाजा खोलनेमें क्यों हुई इतनी देर?

दौलत--अरे लो ये कैसा अंधेर, तुमतो ऐसे जल्दीमें आये हो जैसे मेरे वास्ते जेवर (गहना) बनवा कर लाये हो ।

चक्कर--ले प्यारी तू बार बार जेवर जेवर करती है । जेवर क्या चीज है तुमसे जान तक भी नहीं अजीज है ।

कासिम-(दरबे में से)अरे हैं ये कड़े कहांसे उड़ा लाया है ।

दौलत--अजी ये कड़े कहांसे उड़ा लाये हो कहीं मुरदे का माल तो नहीं उठा लाये हो ?

चक्कर--नहीं नहीं, मैं तो मुरदेके माल पर थूकता भी नहीं, (धीरेसे)(अगर मिल जाये तो चूकता भी नहीं,) अच्छा प्यारी इधर तो आव, हमारे पास, और जरा हंसी दिल्लगी का लुत्फ तो उठाओ ।

मुफलिस--दौलत, दौलत, दरवाजा तो खोल।

चक्कर--अरे हैं, ये कौन?

दौलत--अरे ये तो मेरा खाविन्द मुफलिस आगया!

चक्कर--अरे हाय, मुफलिस।

दौलत--अच्छा तो इसको अन्दर बुलाती हूं।

चक्कर--अरे इस तरह तो मेरी और तेरी दोनों की फजीहत हो जायगी, अरे ये क्या है?

दौलत--अरे येतो मुरगी का दरबा है!

चक्कर--अच्छा तो मुझे इसमें छुपादे मैं यही समझुगा कि मैं भी एक मुरगा हूं।

दौलत--अजी एक नहीं. दूसरा भी मौजूद है!

मुफलिस--अरे दूसरा कौन मरदूद है!

कासिम--(दरबे में से) मरदूद तू, तेरा बाप, हाय, हाय खुल गया मेरा पाप।

कासिद--अबे मुरगीवाले यहां कहां आता है, यहां तो पहलेहीसे एक मुरगा अंडेसे रहा है-कुकडूं कूं.

चक्कर--अरे ये मुरगा कहा बोला।

दौलत--इसी दरबेके अंदर, अजी मियां मुरगे चुपके चुपके बैठे रहो, बरना गलेपर छुरी फिर जायगी, अच्छा मैं उसको अंदर बुलाती हूं।

चक्कर--अरे उस्से तू कह दे, कि अभी जा और बाजार की सैर कर आ।

दौलत--अजी भला घरवालेसे इस तरह औरत कह सकती है!

चक्कर--अजी क्यों नहीं तुम घरवाली हुई और वो घर

बाला, तुमको घरका खअतियार और वो बाहर का मुखतार ।

गाना ।

दरवाजा खोलो झट पट बोलो क्यों देरी कैसी
खट पट जलदी खोलो दरका पट ।
वरना तोड़ूंगा चौखट ।
चल जाना ओ नट खट कर बजार की सैर ।
पलट क्यों तू करता है खट खट ।
ये मेरे अल्लाह मचाता है हल्ला, धींगा ॥
क्यों मैं क्या किधर को जाऊं
कैसे बचाऊं जान प्यारी बता ॥
अब क्या करोगे बच्चा ।
कैसे फंसे हो अच्छा ॥
बैठाहूं मैं भी दरबे में बनके मुरगा ।
कु कड़ूं कूं

दौलत —अच्छा अच्छा मैं दरवाजा खोलती हूं ।

चक्कर—अरे फिर कहीं मुझको छिपा, अरे ए क्या करती है !

दौलत—अजी देखो तो सही, मैं कब डरती हूं !

चक्कर—क्या करती है ?

दौलत—तुम अपनी तलवार को मियानसे बाहर निकालो ?

चक्कर—तो मैं इस तलवारसे इसे मारूं !

दौलत—अजी मारने वारने का नाम भी न लो, वो काम

करो जिससे सांप भी न मरे और लाठी न भी टूटे।

चक्कर--अजी तो बताव कोई तरकीब जिस्से पिंड छूटे

दौलत--तुम अपनी तलवार को म्यानसे बाहर निकालो, और कहते जावके मार डालूंगा । कत्ल करूंगा, बस यही कहते कहते यहांसे बाहर निकल जाना।

चक्कर--अच्छा तो बस बस, मैं यहां भी मैदाने जंग समझूंगा ।

दौलत--अच्छा तो शुरू करो अपना काम ।

चक्कर--मैं मार डालूंगा, कत्ल करूंगा।

मुफलिस--अरे हैं, ये कौन ।

(दौलत का दरवाजा खोलकर मुफलिस को लाना ।)

दौलत--अजी चुपके खामोश हो ।

चक्कर--अरे भाई तू कौन है, अच्छा वो यहां नहीं है, तो जहां मिलेगा वहां मारडालूंगा, कत्ल करूंगा।

दौलत--अजी ये अपने घरमें दीवाना घुस आया था।

मुफलिस--अरे दर दीवाने का घरमें क्या काम।

दौलत--अजी मुकाबला बड़ा बेढब था।

मुफलिस--अच्छा कहो तो सही।

दौलत--अच्छा सुनो मैं इत्तफाकसे दरवाजेपर खड़ी तुम्हारा इन्तजार कर रही थी कि इतने में ये एक बिचारा आया और मुझसे कहने लगा कि माई जी मुझको छुपा, मैंने पूछा कि तुमको क्या होगया है ? तो उसने कहा कि मेरा बाप पागल हो गया है और मुझे मारने आता है, तो मैंने उसको अंदर मुरगी के दरबे में छुपा लिया, और उसीके पीछे यह भी घुस आया। इतने में तुमने दरवाजा ठोंका तो मुझको

तो दरवाजा खोलनेकी भी सुध न रही।

मुफलिस—सुध बुध बलाये बले, बखैर गुजरी तो?

कासिम—(अंदरसे) अहा क्या तद्बीरकी, ऐसी तद्बीर तो किसी शख्सके जेहन, नसीब न हुई होगी।

मुफलिस—अच्छा तो प्यारी उसको बाहर निकलना चाहिये, वरनः वो घुंटकर मर जायगा।

दौलम—हां हां, प्यारे, उसको बाहर निकालो।

कासिम—अब मैं भी ढोंग शुरू करता हूं।

मुफलिस—लो भाई अब तुम यहांसे जाव. वो तुम्हारा बाप तो चलागया।

कासिम—(धीरेसे) अरे मेरा बाप काहेको.तुम्हारा बाप होगा।

मुफलिस—अजी आज मेरी बीबी ने तो तुम्हें गोया मौतके पंजेसे छोड़ाया।

कासिम—(धीरेसे) अरे मुजको क्या मौतके पंजेसे छुड़ाया, बल कि तुझको पूरा उल्लू का माद्दा बनाया।

मुफलिस—अजी ए तो मेरी बीबी बड़ी रहेम दिल है।

दौलत—जीहां, मेरा दिल ही खोदाने बड़ा नरम बनाया है।

कासिम—जी हां इनका दिल तो बड़ा रहम है, (धीरे से) न खौफ है, न हया है न शरम है। लो अच्छा अब मैं जाता हूं और तुम दोनो का शुक्रिया बजा लाता हूं?

मुफसिस—अच्छा अच्छा भाई जाव!

कासिम—अच्छा भाई सलाम!

मुफलिस—सलाम भाई सलाम?

कासिम—वाह बी दौलत तुमने तो अच्छी की तद्बीर।

दौलत—क्यों नहीं काम करने को जिगर चाहिये, ऐब करनेको हुनर चाहिये।

गाना ।

वाह वाह वाह क्या टाला ।
आफत की हूं पर काला ।
वाह वाह वाह वाह मैंने उल्लू बनाके हजारों
ऐसे यार ऐरे गैरे
न हो यारो मेरा शिकार
वाह वाह वाह वाह

अंक तीसरा--परदा तीसरा

जंगल-मय अजदहा

माहेरू--आतिशखान बराए खोदा ठहर जा, थक गई हूं, अबतो मैं हदसे सिवा, दिल में आता है लूं जरा सुस्ता ।

आतिश-माहेरू माहेरू डरता हूं,कहीं वो बलाये नागहानी न आजाये और कोई आफत न आये ।

माहेरू--नहीं आतिशखान वो तो सरदीसे तनगया होगा ! डूबकर मछली बनगया होगा ?

आतिशखान-देख देख, वोही सामने से आता है, और साथ में तेरे मां--बाप को भी लाता है ?

माहेरू-कहां ?

आतिशखान-वह !

माहेरू-हां ?

आतिशखान—छुपजा ?

माहेरू—छुपे मेरी बला ?

आतिशखान--अरे मेरे कहनेसे जरा भी इन्कार होगा, तो ये खंजर तेरे सीने के पार होगा।

माहेरू--हाय खोदा. मुझे किस आफतमें डाला।

बांकेखान--देखिये, देखिये, कम्बख्त इसी रास्तेसे आया होगा, क्योंकि समुन्दरसे रास्ता इधर हीको आता है। और कदमुआ निशान भी पाया जाता है ?

वालदा,माहेरू--हां ठीक है !

माहेरू--अम्मा जान मुझको बचाव, इस मूजी के पंजेसे छोड़ाव ?

वालदा--हैं बेटी तू किस बलामें मुबतिला है !

आतिशखान--जनाब मैं तो आपकी तरफ आरहा था, और इसको आपके मकान पर ला रहा था।

अशरफ--मगर ये तो आपके ऊपर बड़े बड़े यहतेमाम लगाती है, मक्कार ऐय्यार बताती है।

आतिशखान--जनाब मेरी इस नेकनियती का बदला मक्कारी है, तो इसपर हजार जानवारी है !

माहेरू--नहीं अब्बाजान ये मेरा दुश्मने जान है, इज्जतका ख्वाहां है !

अशरफ--क्यों जनाब ये लड़की क्या कह रही है ?

आतिशखान--अजी ये तो पागल हो रही है, जरा इससे पूछिये कि ये है कौन ?

अशरफ--ये कौन है ?

आतिशखान--एक मुफलिस भिखारी बागवां।

अशरफ--माहेरू बागबां ओ खोदा, ये इज्जोशां, क्यों ओ चोर, सीनाजोर उजले ठग, बिरादरे संग, कहां है वो तेरा बब बषे शाहाना, कहां है वो तेरा नवाबीका कारखाना, अरे ओ मूंजी तूने हमारा घर वो इज्जत आबरू सब लूट लिया ?

माहेरू--अब्बाजान, आप उनको सख्त कलमां सुनाते हो, मेरे दिलको दुखाते हो ।

अशरफ--हैं जिस बेहया गरदनजदनी ने तुझपर ये जुल्म किया और तुझको इस दरजे तक पहुंचाया ।

माहेरू--वह जुल्म इसने नहीं किया, सच पूछिये तो वह जुल्म मेरी अम्मां और बाबा आपने किया ।

अशरफ--क्यों लड़की हमने तुझपर जुल्म किया है ।

माहेरू--हां !

आपनेहीं बीजबोया मेरे दिलमें हिर्स का ।
नख्ला पैदा होगया तब आबो गुलमें हिर्सका ।।
आपने आदी बनाया शानो शौकत का मुझे ।
आपने पुतला बनाया किबरो नखबत का मुझे ।।
इसका नतीजा ये हुआ मैं होगई मुफलिस, गरीब ।
महलके बदले होगया एक झोपड़ा मुझको नसीब ।।
आपका फरज है औलादको सिखाये नेक बू ।
न कि इसके दिलमें बुयें आप खुदबीनी की बू ।।

आतिशखान--सद अफसोस, आया है उलटा जमाना जो है कलकी बेटी वो अकलकी है दाना चंद लीबूका नगमां सिखाती है बुल बुलको चिड़िया तराना ।

वालदा—माहेरू—अफसोस कि पहिले ऐसी नथी ये छोटे मूंसे तड़क भड़क की गुफ्त गू, कहांसे आई शायद इसी कम्बख्तने है सिखाई ?

माहेरू—नहीं नहीं ये इसने नहीं सिखाई !

अशरफ—तो फिर किसने ?

माहेरू—सच्ची मोहब्बतने, बदीकी वफादारीने ।

अशरफ—ओ वफादारी की बच्ची, रहने दे ये मोहब्बत सच्ची, बोल ओ बेईमान अब तू क्या कहना चाहता है ।

बांकेखान—बेशक हुजूर मैंने आपका बहोत बड़ा कुसूर और चोरी की । चोरी करना गुनाह में शामिल हो जाता है । इसका निकाह कर दीया जाये । ये लीजिये लौटाता हूं अमानत आपकी । कुछ नहीं किया है अमानतमें खयानत आपकी ।

अशरफ—वालदा, माहेरू—

गजब करदी नहीं कहता वफा करदी कयामत है ।
दगासे की जो हासिल उसको कहता है अनामत है ॥
अरे ओ मूंजी मनहूस ये तेरी कैसी जिल्लत है ।
खिदमत है, हिलाकत है, समानत है, समानत है ॥
तो शाया उसपे लानत है खुदा की तुज पै रहेमत है ।

माहेरू—अब्बा जान, मेरी इतनी अरज कबूल करें मेरे खाविन्द के गुनाह माफ करें ।

अशरफ—अरी ओ नादान छोड़ जलील आदमीको और चल हमारे पास ।

माहेरू—नहीं अबतो रहूंगी मैं इसीके साथ जिसको पकड़ा दिया है अपना हाथ।

आतिशखान—ये देखिये साहब जन्तर की करामात, इस कम्बख्तने लोहबान सुलगाकर ये नीलचढ़ाकर मसानकी मिट्टी खिलाकर इसे उल्लू बना रक्खा है।

यालश्रा, माहेरू—हाय हाय, मेरी लड़कीका दिमाग बिलकुल खराब हो गया है।

आतिशखान—जी हां जुनून कासा हिसाब होरहा है।

बांकेखान—लीजिये साहब ये इकरार नामा देता हूं इसको आजुरदा कीजिये।

माहेरू—देखो ऐ मेरे खाविन्द जैसे मैंने तुम्हारा पहला नामा बनाकर फेक दिया था वैसेही इसको मैं बातिल कीये देती हूं।

अशरफ—अरे लड़की ये तूने क्या किया?

माहेरू—यही कीया!

अशरफ—नहीं बुरा किया?

माहेरू—नहीं अच्छा किया!

अशरफ—अरे ओ लड़की तूने ये इकरार नामे को फाड़के अपने बनते हुये काम को बिगाड़ दिया?

माहेरू—नहीं बलकि जो नसीब बिगाड़ने वाला था उसको फाड़कर फेक दिया।

बांकेखान—खैर, खैर, मैं दूसरा लिखे देता हूं।

अशरफ—आतिश—हां हां जल्दी लाव?

माहेरू—नहीं, नहीं, अब ये बात बड़ी दूर है। अगर तुम

हाजर इकरार नामा लिखो तो क्या होता है । यहां इश्कने दिल में घर कर लिया है ।

गाना ।

गमकी भँवर में मैं डूबी हूं किरतार ।
नैया तू मेरी लगादे पार ॥
दुख सह सह के अबतू प्यारी हां विचारी ।
जिया तनसे गयो मोरा निकसे नाहीं ॥
क्या जनत करूं करमों की मारी ।
ओ वारी मैं हारी फलक सारा दुशमन है ॥
पुरफन है बदचलन है करतार ।
है ख्वारी... ....गमकी भँवर ॥

अशरफ--अफसोस, साहब हमतो ये ख्याल करके आये थे कि अरकटी नवाबके यहां जायँगे और दो लाख रूपये लाकर अपना करजा चुकायेंगे ।

आतिशखान—जीहां ,यहां तो अरकटी नवाब अरकटी मिरुद्दौलहके बदले मुफलिस खांन मिकले ।

गाना ।

तुम दाना दिल हो जी प्यारे ।
दोगेजी दाना सरबे मेहर गरदानी ॥
इस काले मे डाले हम पर क्या सितम ।
ये धोखा देकर किया सितम ॥

फिर करजा खुवानी का सितम फिर हैरानी।
गर निकाले सारे देन के तारे ॥
सारे ताने मूंजी तेरा दो लाख देखा ।
सगरे झगड़े जाने तू ।
जाने तू जाने तू॰ तुम दाना दिल........

अशरफ--अरी ओ नादान, तू अब भी किसी दौलत मन्द-के यहां जायगी तो हमारा दो लाख का करजा चुकायगी, और ऐस में तमाम उम्र सुख पायगी ।

आतिशखान—अजी हां ऐसे बेकारके पास जायगी तो कुछ आपसे ही मंगवायगी, दो लाखके: बदले सवा दो लाख का करजा चढ़ायगी ।

माहेरू—क्यों ओ मूंजी तूनेही मेरा उसके साथमें निकाह कराया, अब तू खुद गरजीके वास्ते बातें बनाता है, खोदासे खौफ नहीं खाता है !

आतिशखान—क्या मैंने ?

माहेरू—हां तूने !

आतिशखान--अजी हजरत, बन्दा रुखसत ।

अशरफ--क्यों क्यों जनाब ?

आतिसखान—अजी जनाब आपने सुना नहीं कि यह कहती है कि तूनेहीं निकाह कराया, कल को कहेगी मेरी किस्मतमें भी तूने ही लिखा था । बलके लिल्लाह मेरी औलाद भी तूने ही पैदा किया था ।

अशरफ—तोबा, तोबा ।

आतिशखान—तोबा, तोबा ।

अशरफ--अच्छा साहब खोदा हाफिज।

आतिशखान--अब मैं यहां से जाऊं और दो लाखकी लालच देकर शादी की अट सट लगाऊं।

असरफ--अरी ओ नादान ऐसा शरीफ और उस पर ये तोहमत?

बांकेखान--अजी हजरत आप इसको न झिड़किये और मेरे जखमों पर नमक न छिड़किये।

अशरफ--चल ओ सफ्फाक बेबाक, बरना अभी करूंगा तेरा सीना चाक। चल ओ नंमेखान खान की लड़की, हमसे जुवां मिलाती है, तुझे शरम नहीं आती है।

गाना।

हाय गई मोरी सजनी काहे करू।
अबतो मरूं हां अब जीवन हाये॥
पती किस बिध जाऊं जोग मनाऊं।
हाय पती हाय रे............

(सबका जाना और दिलेरखान शेरखानका आना।)

दिलेरखान--अब्बा जान मैं खुद जाता हूं और उसको उतार लाता हूं अब्बा जान जरूर इस बलासे बचाऊंगा।

शेरखान--हैं ये शोले कैसे जान जोखममें हैं, ये सामान खोदा खैर करे यह तिलस्म है या इसरार, खोदा करे जो हो' सांप, सांप, परघर दीगार, जमाना मेरे फरजंद को बचाना।

चक्कर--तअज्जुब है।

नौकर--हैरत है।

चक्कर--तदबीर।

सिपाही—मोकद्दर, तकदीर ।

चक्कर—मजबूरी है ।

सिपाही—लाचारी है ।

चक्कर—मेरी बंदूक लाना ?

सिपाही—हूँ हूँ बन्दूक न चलाना !

चक्कर—क्यों इससे क्या होगा ?

सिपाही—दिलेरखानको भी जरर होगा !

शेरखान—हां हां होगा और जरूर होगा, ऐ मेरे जांबाज अगर कोई मेरे फरजन्द की जान बचायेगा तो वो ईनाम पायेगा ।

बांकेखान—जनाबे आली अगर आपके फरजन्द की जान बचाऊंगा तो मैं अपनी दिली मुराद पाऊंगा ?

शेरखान—हां, हां, मैं तेरी दिली मुराद बर लाऊंगा, और तेरी गरीबी दूर करूंगा !

बांकेखान—फजले खोदासे अगर मेरा निशाना कारगर हुआ, और आपके फरजंदकी जान बचगई, तो मैं हजार मोहर लूंगा ?

शेरखान—बेशक मैं तेरी उम्मीद पूरी करूंगा औ तेरा दामन जरो जवाहरातसे भरूंगा और याद रख तेरे निशाने से मेरे फरजंदको नुकसान होगा, तो तू बेजान होगा ?

बांकेखान—ये मुझे मुंजूर है, मगर लाइये कोई दीजिये नामादार ।

शेरखान—तो इसका गवाह है पाक परवर दिगार ।

(बांकेखान का, सांप को मारना ।)

अंक तीसरा—पर्दा चौथा।

अगला महल।

मुफलिस—मुझे भी अजीब किसिमकी चालाक और बेवाक मिली है। खोदा जाने किस किसको घरमें बुलाती है और जब मैं दर्याफ्त करता हूं बातोंमें उड़ाती है; एक तो मुरगीके दरबे में बरामद हुआ, दूसरा तलवार फिराता हुआ निकला, मगर तलवार फिराने वाले पर तो मुझेचक्करका शक आताहै। क्यों कि जबसे उसकी पलटन शहेरके नजदीक आई है तबसे रातको अंधेरे संधेरे में मेरे मकानके इरद गिरद मेंवो चक्कर लगाता है। जाहिर में तो मुजसे मिलता है और बातन में मेरी जोरूसे आंख लड़ाता है। लो सामनेसे वोही कम्बख्त आता है।

चक्कर—दोस्त मुफलिस सलाम आलेकुम।

मुफलिस—आलेयकुम सलाम।

चक्कर—क्यों दोस्त मुफलिस अच्छे तो हो?

मुफलिस—क्या बतलायें यार मेरे पीछे एक भूत पड़ा है भूत।

चक्कर—क्या, क्या, भूत! अरे ये कम्बख्त मुझे तो भूत नहीं समझता है।

मुफलिस—मगर मैं उसको हारूत मारूत की तरफ गिरा दूंगा।

चक्कर—कहो तुम्हारी बीबीका मिजाज तो अच्छा है।

मुफलिस—अरे यार आजकल वो तो तुरकी घोड़े की

तरह वाला औ खंदक खोदनेको तैयार है, मगर मैं उसको एक बात पर आजमाना चाहता हूं।

चक्कर--आजमाना चाहते हो? क्यों कर।

मुफलिस--अरे यार कल मेरे मकानमें एक तलवार पकड़े नजर आया था!

चक्कर--(धीरेसे) अरे वो तो तुझको बच्चा चक्करने चकराया था।

मुफलिस--(धीरेसे)हां तूही तो बदजात था।

चक्कर--हां यार आजमाना चाहिये! वो क्यों कर ?

मुफलिस--तुम उससे दिल्लगी हंसी की बातें करना और उसको आजमामा और वो जो कुछ कहे मुझे बतलाना।

चक्कर--धीरेसे कम्बख्त ये नहीं जानता कि मैं पहले हीसे आजमाये हुआ हूं। मोहव्वतकी घातें लगाये हुआ हूं।

मुफलिस--धीरेसे अबे मैं कहां जाता हूं मैं कहीं छुपकर तुम दो-नों की बदजाती देखता हूं।

(दौलतका आना।)

दौलत--अजी ये आज तुमको क्या हो गया है,जो आपही आप हंस रहे हो?

चक्कर--अरी दौलत ये तेरा खाविन्द तो अजब पल्ले दरजे का बेवकूफ खर है। बलके पूरा उल्लू की दुम है। मुझे कहने लगा कि तुम दौलत को आजमाना,हंसी दिल्लगी करना, मगर ये नहीं मालूम कि हमतो पहिले ही आजमाये हुये हैं मोहव्वतकी घातें लगाये हुये हैं।

गाना।

दौलत--प्यारे तेरे आन बान पै फिदा जहां है वाला।

गोरे गोरे गालों में है गुललाला ॥
मतवाला तो है फूल लाला।
प्यारे तेरा जोबन है जानी निराला ॥
जान जरा बोसा तो दे दे वाला।
अररर बसकर बसकर हट,
नट खट बद असली........

मुफलिस—बस मालूम हुआ, सब गड़ बड़ घोटाला है, इन दोनोंमें जरूर दालमें काला है। मैं जाता हूं और इनको पकड़ता हूं।

दौलत--अजी ये आपके दोस्त कितनी देरसे आये हुये हैं?

मुफलिस--अजी ये आपके दोस्त आये हुये हैं और अड़े हुये हैं?

दौलत--अजी आज तुम्हें क्या हुआ है, पागल तो नहीं हो गये।

मुफलिस—अरे मैंने क्या अंधेरा किया। ये सब अंधेरा हुआ दौलत बी ही सब कर गई। मगर दौलत ये तेरी नाक पर क्या लगा है ला मैं पोछ दूं?

दौलत—क्या है?

मुफलिस—अच्छा अब मैं लाल टेन जला लाऊं।

चक्कर—ला प्यारी अंधेरेमें एक बोसा तो दे?

दौलत—अजी हटो भी कहीं मेरा खाबिन्द न देखता हो!

चक्कर—अरे यहां कौन देख सकता है, इस अंधेरे में तो फिरिश्ता भी नहीं देख सकता।

मुफलिस – हत्तेरेकी क्यों बे अब भी मुकरेगा।

दौलत - अजी आज तुम्हें हुआ क्या है, पागल होगये हो?

मुफलिस—हां पागल होगया हूं, दीवाना होगया हूं, मगर तुम जरा अपनी नाक तो देखो ?

चक्कर—अरे ए नाक नाक क्या कर रहा है जरा आईना तो देना (दौलत से) अरे हैं ये सियाही का धब्बा कहांसे लग गया है ।

मुफलिस—अरे ये तो तुम्हारी रूसियाही का दाग है, दूसरे की जोरू का पता लेना ऐसाही पाप है । अब तुम ठहरो तुम दोनो की नाक काटताहूं !

दौलत औ—चक्कर—पुलिस पुलिस, दौड़ो, दौड़ो ।

सिपाही—क्या है ? क्या है ?

दौलत—देख भाई ये मेरी नाक काटता है ?

सिपाही—अरे भाई तुम क्या गजब करते हो ! सरकारी कानून नहीं जानते हो ?

मुफलिस—क्या कानून है ?

सिपाही—अगर तुम औरत की नाक काटोगे तो सात बरस के लिये चक्की पीसने भेजे जाओगे !

मुफलिस—आई डिड नो ।

सिपाही—अगर ये औरत तुम्हें पसंद नहीं है तो तीन बार तलाक देदो झगड़ा पाक हुआ ।

मुफलिस—चल, मैंने तुझे तीन बार तलाक दी ।

दौलत—अरे चल मुये तू मुझेके क्या तीन बार तलाक देता है । मैं तुजको छ बार तलाक देतीहूं, चलो प्यारे चक्कर अब हम तुम निकाह पढ़ायें और मजे उड़ायें ।

चक्कर—अरे चल, तू किससे निकाह पढ़ाती है, एकके गलेसे बला उतरी और दूसरेके गले पड़ती है ।

दौलत--हैं प्यारे चक्कर, मैंने तुम्हारे ही वास्ते तलाक लिया, क्या मुझको मेरी प्यारी मोहब्बत का यही फल मिला है।

चक्कर—अरे चल ये प्यारी मोहब्बतो मतलबसे थी साफ साफ ऐसी हरजाईको गले बांधना अक्ल मंदीके खिलाफ है, चल हट तेरा मुंह काला ।

मुफलिस--चल हट ।

अंक तीसरा—पर्दा पांचवां

बगीचा ।

माहेरू—आली धीरज धर धीरज गम न करो ।

इश्क—गालिब के फंदेमें आता नहीं ।

दिल बे वफा से लगाता नहीं ।

ए सब को जहां से मिटाता नहीं ।

ए तो जालिम जवानी मिटाता है ॥

कौन है वो तेरा यार जानी ।

जिसकी खातिर है ए परे शानी ॥

प्यारा दिलारा हमारा वो प्यारा ।

बांका मेरा वो प्यारा बांका ।

या अल्लाह मैं किधर जाऊं, वालिद करजसे लाचार हैं, मैं निबाहना चाहती हूं ।

किस सितमो रंजपै जीना होगा ।

जहेर देके मुझे कहते हैं पीना होगा ॥

अशरफ--ऐ हमारी बेटी, जानसे अजीज बेटी माहेरू, जो मुश्किल तेरे मा बाप पर पड़ी है उसे तू खूब जानती है ?

माहेरू--अब्बाजान अगर मैं आतिशखानसे शादी न करूं तो आफत टलनेकी कोई सूरत नहीं ?

अशरफ--कोई नहीं, सिर्फ इसी बातपर उसने दो लाख रुपया देनेका वायदा किया है।

माहेरू--अगर मैं आतिशखानसे शादी न करूं तो ?

अशरफ--तो हमारे वास्ते जेहल खाना है, और तुझे गली गलीकी ठोकरें खाना है!

आतिशखान--क्यों जनाब क्या खयाल है ?

वालिदा,माहेरू--आतिशखान मैंने तुम्हारे लिये बहोत समझाया मगर इसका दिल राहेरास्त पर न आया। अब हम तुम्हे इस बातका मौका देते हैं कि तुम भी उसे समझाओ और उसका दिल अपने कबजेमें लाओ।

आतिशखान-- (माहेरू से) क्यों जनाब मिजाज कैसा है?

माहेरू--आपकी इनायतसे अच्छा है !

आतिशखान--क्या मेरी इनायत से ?

माहेरू--जी हां आपकी इनायनसे तो बरसोंसे मेरे दिल पर आफत बरपा हो रही हैं।

आतिशखान--कहिये अब शादीके लिये तुम्हारी क्या मरजी।

माहेरू--क्यों जी, ये कहां का दस्तूर है,कि तुम्हारी इनायत से एक शादी हो चुकी, अब दूसरी कहां से हो सक्ती है।

आतिशखान--अरे वो शादी थी वो तो बच्चों का खेल था, दूसरे उस बांकेखान बागबान ने तुझसे कितातालुक ही कर दिया है।

माहेरू---अगर उसने किता तालुक करदिया है तो क्या मेरे दिलसे तो किता ताल्लुक नहीं हो सक्ता ?

आतिशखान---क्या अब तक तू उस लकीर की फकीर है !

माहेरू---बेशक ये मोहब्बत पत्थर की लकीर है।

आतिशखान---

नहीं तेरे मूंसे जो ऐ महजबीं निकले ।
तुझे है माफ पै हरदम तेरे मूंसे नहीं निकले ॥

वखैर यही आफत आई है साथ उनके उन पर भी आफत आई है।

अशरफ--बजा है, बेटी माहेरू बजा है, हमको तबाहीसे बचा ?

वालदा, महेरू--आफतसे, सच है बेटी जातसे कोई फायदा नहीं, अरे बेटा होता तो ऐसे गाढे वक्तमें जरूर काम आता !

माहेरू---अब्बाजान, अब्बाजान, अगर मैं बेटी जात हूं तो मैं बेटा बनजाऊंगी, अगर मुझको जलती आगमें कूदना पड़ेगा तो कूदकर इस आफतसे बचाऊंगी।

अशरफखान--शाबाश बेटी खुदा तेरी उम्र दराज करे।

आतिशखान---अब तुझको शादी मंजूर है ?

माहेरू--हां मंजूर है !

आतिशखान--अब कैसे राह पर आई।

इस तरह झुकती है मेरे आगे गरूर की गर्दन ।
जिस तरह झुकती है बोझ से मजदूर की गर्दन ॥

अब मैं जाऊं और दो लाख रुपया लाकर शादी करूं ।

माहेरू--वालिद को दो लाख रुपया दिलाऊं और इस जहरी सांप के पहेलू में लेटनेसे पहले जहर खाकर मर जाऊं।

गाना ।

प्रीतम हमको छाडके जाय बसे परदेश ।
जीमें है विष खाय मरूं या छोडदं सूना देस ॥
अयरी सखी जिया न कल पाओ ।
दरशन देंगे पियरवारी सखी ॥
उन बिन मैं तलफत हूं कल न पडे, हाय ।
हायरी सजनी हायरी आली ॥
धीर धरो सजनी अन वन जीया जाये ।
चैन न पावे ये मोरा जी या..........

चक्कर--बंदगी जनाब बंदगी ।

अशरफ--आइये जनाब बंदगी, बंदेने आपके तमाम फौज की दावत दी थी ।

चक्कर--जी हां और अशरफ नव्वाब आने वाले हैं और ये हमारे फौजके सिपहसालार हैं ।

अशरफ--आइये जनाब आप भी तशरीफ लाइये ए बेटी माहेरू ए दोनो फौजी जवान हमारे मेहमान हैं तुम थोड़ी देर इनका दिल बातों चीतोंमें बहलाओ हम अभी आते हैं ।

माहेरू--आइये जनाब मेहरबान आप मेरे वालिद के दोस्त हैं बाला शान आपको तो मैंने जाना मगर इन साहेब को नहीं जानती ।

चक्कर--जी हां अभी इनको पहचानियेगा ये हमारे फौज के अफसर हैं जाहो मर्तबे में घाला हैं।

चक्कर का साथी—मगर हमने इसमें सुनाहै कि आपकी शादी मरजी केखिलाफ होती है क्या ये सचहै।

माहेरू—हां ए भी सच है, मां बापके गिरफ्ते वख्त में काम आऊं ।

काम मां बापके आयें ये है किसमत मेरी ।

इनको गिरते से बचालूं है सआदत मेरी ।

इनके कदमोंके तले रहती है जन्नत मेरी ॥

चक्कर---मगर लड़की हमने ये सुना है कि ये शादी बड़ी जबरदस्ती से हो रही है।

बांकेखान—मगर आपको वो गरीब बांगवां भी याद है।

माहेरू—अरे हाय तूने ए किसकी जिकर छेड़ी, कहां वो बादशाहत कुछ उसको मेरी भी याद है।

बांकेखान—

जुदाई मे तेरी वो शेवनो फरयाद करता है।

कफससे बुलबुले बेकश को अब आजाद करता है।

माहेरू---या अल्लाह ये क्या बात है, आंखों को वोही सूरत नजर आती है। इसमें तो उस मेरे गुले पुर बहार की बू पाई जाती है, मगर कहां है वो मेरे बागे सेहन का बागवां !

बांकेखान--मैं यही हूं वो आपका बांकेखान बागबां ।

माहेरू--क्या मेरी जान बांकेखान ?

गाना ।

हाय संवरिया फेरे नजरियारे ।
मोरा जीना मोहाल हाथ हमारा छोड़
मोहे तज वांसे सिधारारे ।
बापके घरमें आन लीनी सुध
मोरा हुआ जीना मोहाल.........हाय०

(अशरफ का आना)

अशरफ—क्यों बांकेखांन इस तरह आनेका, ये चाल बनाने का तेरा सबब क्या है ?

आतिशखान---जल्द बतला इसका मतलब क्या है ?

चक्कर—अजी मियां सौदागर साहब वो दिन गये अब सुख का वक्त आया वह "जहां धूप थी वहां छाया है" इस तरह दिन गुजर गये बक्त जरूरत, जिस तरह छिप जाता है साथ आफताब के ।

आतिशखान—अजी काजी साहब इधर आइये और मेरी निकाह पढ़ाइये ?

काजी--(असरफसे)हां, वो आपकी लड़की कहां है ? आइये लड़का लड़की का नाम रजिष्टर में लिखवाइये ।

वालदा—काजी साहब जरा ठहरिये पहिले रुपया तो निकलवाइये, फिर शादी की तदबीर अमलमें लाइये ।

बांकेखान---साहेबों मेरी एक बात सुन लीजिये आपकी दुख्तर पर कुछ इससे बढ़कर हक मेरा है ।

दीनो दुनिया गवाही देगी इस बात की ।
बढ़के कीमत लीजिये इस गौहरे बेबाक की ॥

दुगनी है रकम बेखौफ इसको लीजिये ।
और किसीको अपने दिलमें न आने दीजिये ॥

बादला.माहेरू— पेशौहर अगर खोदा को यही मंजूर है तो इन दोनों की शादी कर देना जरूर है ।

अशरफ—(आतिशखान से) अब आप तशरीफ ले जाइये ।

आतिश खान—
कम्बख्त फरक क्या है तुझमें औ शैतान में ।
क्या इस वक्त तूने दिया मुझे अंधा बना ॥

बांकेखान—
चल दफा हो सामने से दूर हो ऐ रूसियाह ।
काम तेरा कुछ नहीं है यहांसे दफाहो बेहया ।

चक्कर—अजी हजरत एक दिन वो था कि ये नव्वाब बने थे और सब सेक्रेटरी अब .एक वक्त ये है कि ये शाही फौज के कप्तान इधर मैं इनका एडींकांग ।

आतिशखान—इनकी शादीसे मैं इनका होगया गुलाम ।

बांकेखान—पकड़ो पकड़ो इस नाहिंजार नाबकार को, इसने मुझको ऐसी जिल्लत वो शरमिन्दगी दिलवाई जो मेरी बाइसे रुसवाई है। अब इसको ले जाव और जेलर के सुपुर्द करो ।

चक्कर—क्यों जनाब शादी के मुकतियां ये अब तो हुये आप कैदी एक काजी के बदले चार चार आगये काजी, अब ये आपको बहुकुम कजाय कदर कामी के प्यादे की तरह

वहां ले: जायंगे और आपका निकाह मलेकुल मौतसे करायेंगे ?

लाई हयात आये कजा लेचली चले ।
अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले ।

आतिशखान—अफसोस. इनसान अपने वास्ते क्या क्या मनसूबे लड़ाता है, मगर जो तकदीर में लिखा होता है वही सामने आता है. ये शरमिन्दगी दर्याये निदामत में डुबोती है, बांकेखान मैंने आपको दर्या ये निदामत में डुबोना चाहा मगर कोई तद्बीर कारगर न हुई अब मेरे गुनाह को माफकर ?

बांकेखान—आतिशखान, तुम्हारा इसमें क्या कुसूर है हरशख्स कानूने कुदरत से मजबूर है मेरी किसमत में जो कातिबे तकदीर ने तहरीर फरमाया है मैंने वही पाया है !

आतिशखान—काजी साहब आइये, बांकेखान व माहेरू का निकाह पढ़ाइये और इस काम कोअंजाम पहुंचाइये और दो लाख रुपया जो मैं अपनी शादी के वास्ते लाया था वो मैं चक्कर को देता हूं ।

काजी—

शाद रख दोनो को ये शादी मुबारक ऐ खोदा ।
दुःख मिले हैं जिस तरह अब सुख मिले सबको खोदा ॥
रंजो राहत के सिवा एक जांचहै इनसांकी याँह ।
दर है दुनियां की जैसे चलती फिरती धूप-छाँह ॥

गाना ।

आओ आओ आओ प्यारी देखो गुलकारी
फूलों की क्यारी आओ ।
गुल है गुलशन में खिले प्यारी,
ओ प्यारा मिले हर पाई है,
हरपाई है, हरपाई है, फुलवारी,
बागो बहारी सजाओ ।
मुबारक बादियां गाओ गाओ । प्यारी०

* इति *